

卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

धर्मचक्रवर्ती, महामहोपाध्याय, जीवनपर्यन्त कुलाधिपति, वाचस्पति, महाकवि
श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज
का राष्ट्रीय, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना का संवाहक

श्रीतुलसीपीठसौरभ

(मासिक पत्र)

सीतारामपदाम्बुजभक्तिं भारतभविष्यु जनतैक्यम्।
वितरतु दिशिदिशि शान्तिं श्रीतुलसीपीठसौरभं भव्यम्॥

वर्ष १४ दिसम्बर २००९ (४, ५ जनवरी २०१० को प्रेषित) अंक-४

संस्थापक-संरक्षक

श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

संरक्षक एवं प्रकाशक

डॉ० कु० गीता देवी (पूज्या बुआ जी)
प्रबन्धन्यासी, श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास, चित्रकूट

सम्पादक

आचार्य दिवाकर शर्मा
220 के, रामनगर, गाजियाबाद-201001
मो०- 09971527545

सहसम्पादक

डा० सुरेन्द्र शर्मा 'सुशील'
डी-255, गोविन्दपुरम्, गाजियाबाद-201001
दूरभाष : 0120-2767255, मो०-09868932755

प्रबन्ध सम्पादक

श्री ललिता प्रसाद बड़धवाल
सी-295, लोहियानगर, गाजियाबाद-201001
0120-2756891, मो०- 09810949921

सहयोगी मण्डल (ये सभी पद अवैतनिक हैं)

डा० श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव, 09971149779
श्री दिनेश कुमार गौतम, 09868977989
श्री सत्येन्द्र शर्मा एडवोकेट, 09810719379
श्री अरविन्द गर्ग सी.ए., 09810131338
श्री सर्वेश कुमार गर्ग, 09810025852
डॉ० देवकराम शर्मा, 09811032029

पूज्यपाद जगद्गुरु जी के सम्पर्क सूत्र :

श्रीतुलसीपीठ, आमोदवन,
पो० नया गाँव श्रीचित्रकूटधाम (सतना) म०प्र०-485331
07670-265478, 05198- 224413

वसिष्ठायनम् - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य मार्ग
रानी गली नं०-1, भूपतवाला, हरिद्वार (उत्तरांचल)
दूरभाष-01334-260323

श्री गीता ज्ञान मन्दिर

भक्तिनगर सर्कल, राजकोट (गुजरात)
दूरभाष-0281-2364465

पंजीकृत सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता
आचार्य दिवाकर शर्मा,
220 के., रामनगर, गाजियाबाद-201001
मो०- 09971527545

रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले विषयानुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	सम्पादकीय	-	३
२.	वाल्मीकिरामायण सुधा (५६)	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	४
३.	श्रीमद्भगवद्गीता (८७)	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	८
४.	शिखा की वैज्ञानिकता का रहस्य	पूज्यपाद पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत	१०
५.	रासपञ्चाध्यायी विमर्श (६)	पूज्यपाद जगद्गुरु जी	१२
६.	विकलांग दिवस समारोह २००९	कुलसचिव	१४
७.	सादर आमन्त्रण	तुलसीपीठ सेवान्यास	१७
८.	चित्रकूट में पुनर्वास विकास केन्द्र की स्थापना	डॉ० शचीन्द्र उपाध्याय	१८
९.	पूज्यपाद जगद्गुरु जी के आगामी कार्यक्रम	प्रस्तुति- पूज्या बुआ जी	१९
१०.	समाचारपत्रों की सुखियों में	-	२०
११.	द्वारका में भागवत कथा	निवेदक-राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	३१
१२.	व्रतोत्सवतिथिनिर्णयपत्रक	-	३२

सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन

- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ का प्रत्येक अंक प्रत्येक दशा और परिस्थिति में प्रत्येक महीने की ४ तथा ५ तारीख को डाक से प्रेषित किया जाता है। पत्रिका में छपे महीने का अंक आगामी महीने में ही आपको प्राप्त होगा।
- ‘श्रीतुलसीपीठ सौरभ’ मंगाने हेतु बैंक ड्राफ्ट ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ के नाम से ही बनवाएँ तथा प्रेषित लिफाफे के ऊपर हमारा नाम तथा पूरा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। मनीआर्डर पर हमारा नाम-पता ही लिखें प्रधान सम्पादक अथवा प्रबन्ध सम्पादक कभी न लिखें।
- पत्रव्यवहार करते समय अथवा ड्राफ्ट-मनीआर्डर भेजते समय अपनी वह ग्राहक संख्या अवश्य लिखें जो पत्रिका के लिफाफे के ऊपर आपके नाम से पहले लिखी है।
- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ में ‘पूज्यपाद जगद्गुरु जी’ से अभिप्राय धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज समझा जाए।
- ‘श्रीतुलसीपीठ सौरभ’ में प्रकाशित लेख/कविता/अथवा अन्य सामग्री के लिए लेखक/कवि अथवा प्रेषक महानुभाव ही उत्तरदायी होंगे, सम्पादक मण्डल नहीं।
- ‘श्रीतुलसीपीठसौरभ’ प्राप्त न होने पर हमें पत्र लिखें अथवा फोन करें। हम यद्यपि दूसरी बार पुनः भेजेंगे। किन्तु अपने डाकखाने से भलीप्रकार पूछताछ करके ही हमें सूचित करें।
- डाक की घोर अव्यवस्था के चलते हमें दोषी न समझें। हमें और आपको इसी परिस्थिति में ‘पूज्यपाद जगद्गुरु जी’ का कृपा प्रसाद शिरोधार्य करना है।
- सुधी पाठक अपने लेख/कविता आदि स्पष्ट अक्षरों में लिखकर भेजें। यथासमय-यथासम्भव हम प्रकाशित करेंगे। अप्रकाशित लेखों को लौटाने की हमारी व्यवस्था नहीं है।

सदस्यता सहयोग राशि

संरक्षक	११,०००/-
आजीवन	५,१००/-
पन्द्रह वर्षीय	१,०००/-
वार्षिक	१००/-

-सम्पादकमण्डल

श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास, चित्रकूट के स्वामित्व में मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ० कु० गीतादेवी (प्रबन्धन्यासी) ने श्री राघव प्रिंटर्स, जी-17 तिरुपति प्लाजा, बेगम पुल रोड, बच्चापार्क, मेरठ, फोन (का०) 4002639, मो०-9319974969, से मुद्रित कराकर कार्यालय 220 के., रामनगर, गाजियाबाद से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय-

पावन जन्म दिवस पर श्रीगुरुचरणारविन्दों में कोटि-कोटि नमोराघवाय

श्रीराघव परिवार के अन्यून सदस्यों तथा श्रीतुलसीपीठ सौरभ के हजारों सहयोगियों को यह भलीभाँति ज्ञात है कि १४ जनवरी मकर संक्रान्ति का पावन पर्व धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूट तुलसीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज का भी जन्मजयन्ती दिवस है। इस दिन लाखों-करोड़ों सनातनधर्मी महानुभाव भगवान् भुवन भास्कर को तो प्रणाम करते ही हैं साथ ही पूज्यपाद जगद्गुरु जी के प्रति भी पूर्ण आस्था और श्रद्धा अर्पित करते हैं। यह तथ्य किसी भी भारत, भक्त एवं भविष्यता प्रेमी महानुभाव से तिरोहित नहीं है कि वर्तमान आध्यात्मिक जगत में विलक्षण प्रतिभा अद्भुत स्मृति और शास्त्रीय शेमुषी का जितना सुन्दर संगम पूज्यपाद आचार्य चरणों के रोमरोम में प्रवाहित है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। विकलांगों के प्रति अनन्य निष्ठा और भारतीय आर्ष वाङ्मय की उत्तरोत्तर प्रतिष्ठा का पावन संकल्प लेकर पूज्यपाद जगद्गुरु जी अपनी स्वर्णयात्रा के १४ जनवरी २०१० को साठ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर पूज्य आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रमुख चारुचर्चा तो श्रीतुलसीपीठ चित्रकूट में समायोजित होगी ही देश-विदेश के अनेक स्थानों पर भी उनके दिव्यगुणगणों का यशोगान किया जाएगा। परम सत्य भी यही है कि आप्तपुरुषों-महापुरुषों का प्राकट्य दिवस आस्था के धनी समाज के लिए 'महोत्सव' ही होता है। हो भी क्यों नहीं, जब श्रद्धा निष्ठा और आस्था का अर्घ्य अर्पित करने वाले भगवद्भक्तों को मनोवाञ्छित सुफल और निष्कण्टक सन्मार्ग प्राप्त हो जाए साथ ही भगवत्प्रेमानन्द का सागर अपनी उतालतरङ्गों से मानव जीवन की ऊँचाईयों को छूने जैसा लगे तब सौभाग्यशालियों को अपने आराध्यदेव का दर्श-स्पर्श किसी महोत्सव से कम नहीं होता। इस उत्सव के उत्स (झरने) में स्नान करने वाले महानुभाव अतिशय धन्यता का अनुभव करते हैं। यही कारण है कि श्रीराघव परिवार अपने परमाराध्य पूज्यपाद जगद्गुरु जी के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा-निष्ठा और आस्था समर्पित करने के लिए श्रीचित्रकूट में 'षष्टिपूर्ति महोत्सव' आयोजित करेगा साथ ही हरिद्वारीय महाकुम्भ में "षष्टिपूर्ति" नामक एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित करेगा।

श्रीतुलसीपीठ सौरभ के प्रस्तुत अङ्क में पूज्यपाद जगद्गुरु जी के कुशलकृतित्व "जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट" की एक झाँकी "समाचारपत्रों की सुखियों में" निहारी जा सकती है। तो आइये, कीजिए वन्दन अपने गुरुवर को, दीजिए दान गुरुवर के महेश्वर विकलांगों को और लीजिए वरदान अपने आनन्द वर्धन आचार्य चरणों से। यही है मानव जीवन की सार्थकता और भगवत्कैरव्य की श्रेष्ठता।

एक बार पुनः भगवान् श्रीसीताराम जी से पूज्यपाद जगद्गुरु जी के दीर्घायुष्य की विनम्र प्रार्थना और उनके संकल्प निर्विघ्न पूर्ण होने की अभ्यर्थना। नमो राघवाय।

आचार्य दिवाकर शर्मा

प्रधान सम्पादक

वाल्मीकिरामायण सुधा (५६)

(गतांक से आगे)

□ धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

सुरसा ने कहा ए! देवताओं ने मुझे भोजन दिया है और हनुमान जी से बोली-

अहं त्वां भक्षयिष्यामि प्रविशेदं ममाननम्।

मैं तुम्हें खाना चाहती हूँ मेरे मुख में आ जाओ। यहाँ हनुमान जी को चार विघ्न पड़ रहे हैं जो संसार सागर में चारों पड़ते हैं। मैनाक-यही है जीव का अज्ञान, तीन मायाएँ-सुरसा-सात्विकी माया, सिंहिका-तामसी माया और लंकिनी-राजसी माया। हनुमान जी ने कहा देवता कब से सदावर्त बाँटने लगे। हनुमान जी ने कहा- मैं सीता जी को देखकर आ जाऊँ फिर खा लेना। सुरसा ने कहा- नहीं मैं तो अभी खाऊँगी। हनुमान जी ने कहा अच्छा अपना मुख फैलाओ। सुरसा ने दस योजन मुख फैलाया हनुमान जी ने अपना आकार बीस योजन कर दिया। बढ़ाते-बढ़ाते क्रोध में आकर उसने अपना मुख सौ योजन (चार सौ कोस) कर दिया। तब हनुमान जी छोटे बने अँगूठे के बराबर हो गये। अँगूठे के बराबर क्यों बने? क्योंकि जब किसी को मूर्ख बनाना हो तो अँगूठा दिखाते हैं। तब हनुमान जी ने सुरसा के मुख में प्रवेश किया और तुरन्त बाहर आ गये और जाने की आज्ञा माँगी। सुरसा ने अपने असली रूप में प्रकट होकर कहा ठीक है श्रीराम की कार्यसिद्धि के आप पधारें आपका कल्याण हो।

अर्थसिद्ध्यै हरिश्रेष्ठ गच्छ सौम्य यथासुखम्।

समानय च वैदेहीं राघवेण महात्मना।।

सीता जी को शीघ्र श्रीराम जी से मिलाओ। हनुमान जी चल पड़े आगे आये तो राहु की माता सिंहिका

मिली यह सबकी छाया खींच लेती थी। हनुमान जी ने सोचा कोई रडार लगा है क्या? देखा तो समुद्र में राक्षसी थी तुरन्त शरीर को छोटा बनाकर उसके विकराल मुख में प्रवेश कर गये और नाखूनों से उसके शरीर को विदीर्ण कर डाला। इसके पश्चात् वेग से उछलकर बाहर निकल आये। सिंहिका मरी, राहु रोया। हनुमान जी ने कहा बेटा जाओ इसका श्राद्ध करो। बोलो वीर बजरंग बली की जय।

शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम्।

हनुमान जी समुद्र को पार कर गये। धीरे-धीरे सूर्यनारायण अस्त हो रहे हैं। अब हनुमान जी ने छोटा सा रूप बनाने का निश्चय किया। चारों ओर नगर में रक्षक है-

पुर रखवारे देख बहु कपि मन कीन्ह विचार।

अति लघुरूप धरौं निशि नगर करौं पैसार।।

सूर्ये चास्तंगते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः।

वृषदंशक मात्रोऽथ बभूवादभुतदर्शनः।।

सूर्यनारायण के अस्त हो जाने पर शरीर को छोटा बनाया। कितना छोटा बनाया? 'वृषदंशकमात्र' टीकाकार ने कहा बिल्ली के आकार जैसा अर्थात् बिलाव के जैसे हनुमान जी बन गये। गोस्वामी जी महाराज कहते हैं-

मशक समान रूप कपि धरी।

वास्तव में यहाँ दोनों अर्थ ठीक होंगे। 'आखौ च वृषभो नृप' वृष माने चूहा और बैल दोनों होते हैं। कोशकार भी 'मशकस्तु विडालः स्यात्' मशक माने बिलाव। वृष दंशतीति वृषदंशकः अर्थात् जो बैलों

को काटता है उतना बड़ा मच्छर का रूप बनाकर हनुमान जी चल पड़े। यह अर्थ भी उचित है क्योंकि आगे चलकर वानर कहेंगे भी-

सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं।

मशक कहूँ खगपति हित करहीं।।

अतः मच्छर वाला अर्थ भी ठीक है। लंकिनी ने देखा और कहा- ए! कहाँ जा रहा है। हनुमान जी ने कहा लंका देखने जा रहा हूँ। लंकिनी ने कहा तुम विदेश जा रहे हो। हनुमान जी ने कहा- हाँ। विदेश ही जा रहा हूँ। वीजा लिया है क्या? हनुमान जी ने कहा वीजा तो नहीं लिया पर राम नाम का बीजमंत्र लिये हूँ। लंकिनी बोलीं तुम मुझे नहीं जानते। मैं रावण की नगरी लंका हूँ। हनुमान जी ने कहा तो मैं क्या करूँ? लंकिनी ने क्रोधित होकर कहा-

ततः कृत्वा महानादं सा वै लंका भयंकरम्।

तलेन वानरश्रेष्ठं ताडयामास वेगिता।।

भयंकर गर्जना करके हनुमान जी को बड़े जोर से एक थप्पड़ मारा। इतने में तो हनुमान जी ने सिंहनाद करके-

ततः संवर्तयामास वामहस्तस्य सोऽङ्गुलीः।

मुष्टिना अभिजघानैनां हनुमान् क्रोधमूर्च्छितः।।

बायें हाथ की उँगलियों को मोड़कर एक मुक्का लगा दिया। लंका वृद्ध तो थी ही मुख पर मुक्का लगते ही सारे दाँत नमो राघवाय हो गये। लंकिनी गिरी और बोली मुझे ब्रह्मा जी ने कहा था-

यदा त्वां वानरः कश्चित् विक्रमाद् वशमानयेत्।

तदा त्वया हि विज्ञेयं रक्षसां भयमागतम्।।

जब कोई वानर तुमको विकल करे तब जान लेना राक्षसों को भय आ गया है।

विकल होसि जब कपि के मारे।

तब जानेसु निशिचर संघारे।।

तब हनुमान जी ने जाने की आज्ञा माँगी तो लंकिनी ने कहा-

प्रविशि नगर कीजै सब काजा।

हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

अब जाओ और सब काम करना। हनुमान जी ने कहा कौन सा सब काम? तब लंकिनी ने कहा अब तो मैं मर ही जाऊँगी। तुम पूरी लंका को जला देना। हनुमान जी महाराज चल पड़े। प्रत्येक भवन देखा-प्रहस्त का, मेघनाद का, जम्बुमाली का भवन देखा पर सीता जी के दर्शन नहीं हुए। अन्त में जब रावण के यहाँ आये तो देखा रावण शयन कर रहा है। दशमुख हैं और बीस भुजाएँ हैं। उसकी मुख्य भुजाओं को हनुमान जी ने जब देखा तो-

ऐरावत विषाणाग्रैरापीडन कृतवृणौ।

वज्रोल्लिखित पीनांसौ विष्णुचक्रपरिक्षतौ।।

रावण के शरीर पर ऐरावत के दाँतों से कहीं घाव लगे थे। उसकी भुजाओं में हल्के हल्के वज्र के चिह्न बन गये थे। अर्थात् इन्द्र का वज्र भी उसे नहीं काट पाता था। विष्णु जी के चक्र के निशान भी बने थे अर्थात् सुदर्शन चक्र भी रावण की भुजाएँ नहीं काट पाता था। जिसकी भुजाओं को राम जी ने खचाखच काटा। रावण की पत्नियों को देखा। सोचा इन सबको देखने से मुझे पाप तो नहीं लगेगा। मेरे मन में विकार नहीं है और मन ही सभी पापों का मूल होता है। रावण के पास जब हनुमान जी ने मन्दोदरी को देखा तो प्रसन्न हुए और थोड़ा सा भ्रम हुआ कि ये ही सीता जी होंगी। फिर विचार किया- नहीं। ये सीता जी हो ही नहीं सकती क्योंकि-

न रामेण वियुक्ता सा स्वप्नुमर्हति भामिनी।

न भोक्तुं नाप्यलंकर्तुं न पानमुपसेवितुम्।।

राम जी से बिछुड़कर सीता जी इस प्रकार शयन

नहीं कर सकतीं। राम से बिछुड़कर सीता जी भोजन नहीं कर सकतीं। राम जी से बिछुड़कर सीता जी एक घूँट जल भी नहीं पी सकतीं। और भी-

नान्यं नरमुपस्थातुं सुराणामपि चेश्वरम्।

न हि रामसमः कश्चित् विद्यते त्रिदशेष्वपि।।

राम जी के अतिरिक्त सीता जी किसी पुरुष के पास नहीं जा सकतीं। यह कोई और महिला है हमारी सीता जी नहीं हैं। सीता जी नहीं मिल रही हनुमान जी चिन्तित हैं, सोचते हैं नियताहार होकर यहीं रह जाऊँ, मर जाऊँ क्या करूँ? मेरा श्रम व्यर्थ हो गया, सागर का लंघन व्यर्थ गया। सीता जी कैसी मिलेंगी। चिता लगाकर निर्णय ले लिया कि अब मैं जल जाता हूँ। ज्योंही चिता में प्रवेश करना चाहा फिर मन ने कहा- नहीं, नहीं। सब कुछ देखा पर अशोकवाटिका नहीं देखी। अब वहाँ चलता हूँ। तब हनुमान जी-

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय, देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

देवताओं को नमस्कार करते हुए बोले- लक्ष्मण सहित श्रीराम जी को नमस्कार रावण के साथ जाती हुई उन देवी सीता जी को नमस्कार है। रुद्र, इन्द्र, यम जी, वायु देवता को नमस्कार है तथा चन्द्रमा, सूर्य और मरुद्गणों को भी नमस्कार यहाँ पर एक बड़ा मधुर वाक्य है। आज हनुमान जी ने सीता जी को 'रामस्य दयिता' और 'आचार्या' कहा। पहली बार श्रीवाल्मीकीय रामायण में शुरु के चौदहवें सर्ग के ४८वें श्लोक में सीता जी को डिमडिम घोष के साथ आचार्या कहा-

रामस्य दयिताचार्या जनकस्य सुता सती।

यहाँ पर भूषणकार ने पक्षपात किया है। आचार्या शब्द को हटाकर उन्हें भार्या कर दिया जो कि अनुचित है। दूसरे आचार्यों ने रामस्य दयिताचार्या ही माना है।

किसी ने च आर्या भी कहा है पर मैं आपके समक्ष रहा हूँ कि यहाँ 'च आर्या' नहीं आचार्या है। सीता जी हमारी आचार्या भारत की प्रथम जगद्गुरु हैं। बोलो प्रथम जगद्गुरु सीता महारानी की जय। कोई जिज्ञासा करे तो उसे मेरा नाम बता देना मैं सबको उत्तर दे दूँगा।

वनेचराणां सततं नूनं स्पृहयते पुरा।

रामस्य दयिताचार्या जनकस्य सुता सती।।

वनचरों के प्रति उनको स्पृहा रहती है अतः सीता जी के दर्शन मुझे अवश्य होंगे।

सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेध्यति जानकी।

नदीं चेमां शुभजलां सन्ध्यार्थे वरवर्णिनी।।

यह प्रातःकाल की सन्ध्या का समय है इसमें मन लगाने वाली जनककुमारी सीता जी यहाँ अवश्य आर्येंगी अतः मैं यहीं उनके दर्शन करूँगा। जब सीता जी को हनुमान जी ने आचार्या कह दिया तो अब आचार्या मिलेंगी। अब तो गुरुदेव को मिलना ही है-

बन्दुं गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

हनुमान जी ने सागर को पार कर लिया है, रामनाम की मुद्रिका लेती है। जब राम जी की कृपा जीव पर होती है तब श्री जैसा समर्थ गुरु मिलता है। समर्थ गुरु मिल जाय तो क्या कहना। अवधी में कहते हैं- जब गुरु मेहरबान तो चेला पहलवान। हनुमान जी जैसा चेला क्या किसी को मिला? अब हनुमान जी महाराज देख रहे हैं-

ततो मलिनसंवीतां राक्षसीभिः समावृताम्।

उपवासकृशं दीनां निःश्वसन्तीं पुनः पुनः।।

ददर्श शुक्लपक्षादौ चन्द्रलेखामिवामलाम्।।

अब हनुमान जी महाराज ने सीता जी को देखा जैसे शुक्लपक्ष के आदि में द्वितीया के चन्द्रमा की

रेखा हो। मलिन वस्त्र धारण किये हुए और राक्षसियों से घिरी हुई थीं। हनुमान जी दर्शन करके गद्गद हो गये-

मन्दप्रख्याय मानेन रूपेण रुचिरप्रभाम्।

पिनद्धां धूमजालेन शिखामिव विभावसोः॥

सीता जी ऐसी दिख रही हैं जैसे धुएँ से ढकी हुई अग्नि की शिखा हो।

पीतेनैकन संवीतां क्लिष्टेनोत्तमवाससा।

सपङ्कामनलंकारां विपद्गामिव पद्मिनीम्।

भगवती सीता जी ने एक ही वस्त्र से चारों ओर से शरीर को ढक रखा था। जब से हरण करके आई हैं तब से उन्होंने इस वस्त्र को स्वच्छ नहीं किया है। स्नान नहीं किया है उपवास कर रही हैं। जल भी नहीं लिया है एक स्थान पर बैठी हैं। कोई अलंकर नहीं पहना है। ऐसा लग रहा है मानो कमल से रहित कीचड़ से युक्त कमलिनी हो उसी प्रकार भगवती जी दिख रही हैं। आँखों से निरन्तर आँसू बह रहे हैं। असहाय दिख रही हैं। महर्षि वर्णन करते हैं-

नीलनागाभया वेण्या जघनं गतयैकया।

नीलया नीरदापाये वनराज्या महीमिव।

एक उनकी चोटी है, चोटी नाग के फन के समान है, चोटी उनके चरण छू रही है। अपनी चोटी से उन्होंने इस प्रकार अपने मुख को ढक रखा है जैसे बादलो के छँट जाने पर नीली-नीली फसल से ढकी हुई पृथ्वी दिखाई पड़ती है। कोई उनका सहायक नहीं है।

प्रियं जनमपश्यन्तीं पश्यन्तीं राक्षसीगणम्।

स्वगणेन मृगीं हीनां श्रगणेनावृतामिव॥

सीता जी को प्रिय जन नहीं दिखाई पड़ रहे हैं, राक्षसियों से घिरी हैं। ऐसा लगता है जैसे कुत्तों से घिरी हुई बेचारी एक हरिणी हो। हनुमान जी सीता जी

के दर्शन करके प्रसन्न हो रहे हैं, अपना धन्यभाग्य मान रहे हैं। सीता जी को प्रणाम कर रहे हैं। मन में सोच रहे हैं कि आज मैंने उन सीता जी देख लिया जिनके लिए मैं सागर को लाँघकर आया ये वही सीता जी हैं क्या? जिनको जनक जी के पृथ्वी से प्राप्त किया था। हनुमान जी मन ही मन विचार करने लगे-

तुल्यशीलवयोवृत्तां तुल्याभिजनलक्षणाम्।

राघवोऽर्हति वैदेही तं चेयमसितेक्षणा॥

सीता जी का शील, स्वभाव, अवस्था ओर व्यवहार श्रीराम के ही समान है। उनका कुल भी उन्हीं के तुल्य महान है। वास्तव में सीता जी ही राम जी के लिए उचित हैं और राम जी ही सीता के लिए उचित हैं।

अस्या देव्या मनस्तस्मिस्तस्य चास्यां प्रतिष्ठतम्।

तेनेयं स च धर्मात्मा मूहूर्तमपि जीवति॥

इन देवी का मन श्रीरघुनाथ जी में और श्रीरघुनाथ जी का मन इसमें लगा हुआ है। इसीलिए ये तथा धर्मात्मा श्रीराम जीवित हैं। इनके मुहूर्तमात्र जीवन में भी यही कारण है। महर्षि वाल्मीकि कितना करुण कहते हैं-

दुष्करं कृतवान् रामो हीनो यदनया प्रभुः।

धारयत्यात्मनो देहं न शोकेनवसीदति॥

इनके बिछुड़ जाने पर भी भगवान श्रीराम जो अपने शरीर को धारण करते हैं शोक से शिथिल नहीं होते यह अत्यन्त दुष्कर कार्य कर रहे हैं। हनुमान जी सोच रहे हैं कि मैं इनमें कैसे बात करूँ? एक तो मेरा शरीर अत्यन्त सूक्ष्म है दूसरे मैं वानर हूँ। दूसरे मैं वानर हूँ। वानर होकर भी मैं इनसे मानवोचित संस्कृत भाषा में बोलूँगा।

क्रमशः.....

श्रीमद्भगवद्गीता (८७)

(गतांक से आगे)

(विशिष्टाद्वैतपरक श्रीराघवकृपाभाष्य)

भाष्यकार-धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

संगति- अब ज्ञान की कुशलता में बुद्धिमत्ता का वर्णन करते हैं-

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्॥

४।१८

रा० कृ० भा० सामान्यार्थ- हे अर्जुन! जो साधक मनुष्य कर्म में भी अकर्म देखे अर्थात् कर्म करता हुआ भी फल न चाहकर, मैं कुछ भी नहीं कर रहा हूँ सोच ले तथा जो कर्मों के न होने पर कर्म देखे। अर्थात् यह समझ ले कि कर्मों का अभाव भी एक प्रकार का कर्म ही है अर्थात् उस परिस्थिति में भी श्रुतिविहित मर्यादा का उल्लंघन न करे, वही मनुष्यों में बुद्धिमान है, वही योगी है, वही सम्पूर्ण कर्मों को करने वाला है।

व्याख्या- इस सम्बन्ध में आचार्यों का परस्पर मतभेद है। यहाँ कर्मशब्द वेदविहित क्रियानुष्ठान के अर्थ में है। कुछ लोग कर्म शब्द को ब्रह्म में आरोपित संसार की सत्ता का वाचक मानते हैं और अकर्म को कर्म अभाव अर्थात् ब्रह्म के अर्थ में देखते हैं। उनके मत में ब्रह्म में आरोपित संसाररूप कर्म में जो अकर्म अर्थात् संसार का अपवाद करके ब्रह्म को ही देखता है और अकर्म अर्थात् कर्म के अभाव वाले ब्रह्म में जो संसार कर्म को देखता है वही मनुष्यों में बुद्धिमान और संसार के कर्म का वेत्ता है। यही अद्वैतवादियों के अध्यारोपवाद न्याय का बीज है। पर उनसे यह

पूछना चाहिए कि बुद्धिमान कौन होता है। सम्यक् दर्शन से या असत्य दर्शन से। यदि सम्यक् दर्शन से बुद्धिमत्ता होती है तो यह बताओ कि क्या कोई विशुद्ध ब्रह्म में असत् संसार का दर्शन करके बुद्धिमान होगा। क्या जिस ब्रह्म में संसार का बाध हो चुका क्या उसका आरोप सम्भव होगा। क्योंकि रस्सी को उसके स्वरूप से पहचान लेने पर उसमें फिर सर्प की प्रतीत कैसी? उसी प्रकार ब्रह्म को तत्त्व से जान लेने पर संसाररूप कर्म का कैसे अध्यारोप हो सकेगा? इन प्रश्नों का उत्तर वे ही जानें कुछ लोग अकर्म पद से ज्ञान अर्थ मानते हैं। अर्थात् जो ज्ञान में कर्म और कर्म में ज्ञान को देखता है वह बुद्धिमान है। अर्थात् ज्ञान में वेद विहितत्व का चिन्तन और कर्म में भगवान् का चिन्तन यही बुद्धिमत्ता है। किन्तु उस व्याख्यान में भगवान् के वचन का विरोध होगा। क्योंकि भगवान् ने गीता ४/३३ में ज्ञानोदय में कर्म की समाप्ति तथा गीता ४/३७ में ज्ञानाग्नि द्वारा कर्म को भस्म होने की बात कही। इसलिए ज्ञान में कर्म दिख ही नहीं सकता। अब मैं पक्षपात शून्य मन से इस श्लोक के व्याख्यान का प्रयास कर रहा हूँ।

कर्मों के अभाव और कर्मों के अनारम्भ को अकर्म कहते हैं। जो कर्म करता हुआ भी गुण ही गुणों में वरत रहे हैं मैं कुछ नहीं करता इस प्रकार आत्मकर्तृक कर्म का अभाव देखता है और कर्म का अनारम्भ न करने पर भी गुणों में गुणों के वर्तने के कारण गुणकर्तृक

कर्म देखता है। अथवा जो कर्म के अभाव में भी कर्म अर्थात् वेद विहितत्व का चिन्तन करता हुआ कर्मकाण्डियों की भाँति करणीय न रहने पर भी वैदिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता वही मनुष्यों में बुद्धिमान है। वही समत्व लक्षण से युक्त है और वही कृत्स्नकर्मकृत् अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों को करने वाला अथवा 'कृत्स्नकर्माणि कृन्तति' इति 'कृत्स्नकर्म कृत्' अर्थात् वही सम्पूर्ण कर्म के वन को काटने वाला है। जैसे- भगवान श्रीराम ने 'धनुर्भग' का रूप कर्म करने पर भी अकर्म देखा।

छुवतहिं टूट पिनाक पुराना।

मैं केहि हेतु करौं अभिमाना।।

और रावण वध जैसे उत्कृष्ट कर्म करने पर भी अकर्म देखा-

कुम्भकरन रावण दोऊ भाई।

यहाँ हते सुर मुनि दुखदाई।।

और अकर्म करणीय न रहने पर भी कर्म ही देखा। परमेश्वर होने से दशरथ, कौशल्या, वशिष्ठ को प्रणाम करना कोई करणीय नहीं था फिर भी किया-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।

मातु पिता गुरु नावहि माथा।।

इसलिए युद्ध करो परन्तु उसमें कर्तृत्व अभिमान मत करो। ॥श्री॥

संगति- उसी अकर्म की व्याख्या करते हैं-

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः।।

४/१९

रा० कृ० भा० सामान्यार्थ- हे अर्जुन! जिस साधक के नित्य नैमित्तिक कर्मों के सभी शुभारम्भ कामनाओं के संकल्प से रहित होते हैं तथा ज्ञान रूप

अग्नि में जिसके सभी शरीरोपयोगी प्रारब्ध से अतिरिक्त कर्म जल चुके हैं उसी को विद्वान लोग पंडित कहते हैं।

व्याख्या- क्रियायें बहुत होती हैं इसलिए 'समारम्भाः' यह बहुवचनान्त प्रयोग हुआ। प्रत्येक आरम्भ बिना संकल्प के नहीं होता। इसलिए कर्मकाण्डी लोग सर्वत्र संकल्प पढ़ते हैं। परन्तु जिसके क्रियारम्भ काम संकल्प से वर्जित परन्तु राम संकल्प से सर्जित होते हैं वही पंडित है। यही कर्म में अकर्मता है।

संगति- अर्जुन फिर प्रश्न करते हैं कि प्रभो। कर्म में अकर्मता कैसे आ सकती है? इस पर भगवान कहते हैं-

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।

कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः।।

४/२०

रा० कृ० भा० सामान्यार्थ- हे अर्जुन! जो कर्म के फलों में आसक्ति छोड़कर मुझ नित्य परमात्मा के चिन्तन से तृप्त है तथा संसार के सभी आश्रयों को छोड़कर जिसने मुझ परमात्मा को अपना आश्रय अर्थात् शरण निश्चित कर लिया है वह कर्म में प्रवृत्त हुआ भी कुछ नहीं करता।

व्याख्या- 'कर्मफलासंग' यहाँ कर्मधारय तत्पुरुष और द्वन्द्व ये तीन समास होंगे। अर्थात् कर्म जिसमें फलित होते हैं ऐसे आसङ्ग अर्थात् आसक्त को छोड़कर अथवा कर्मों के फलों में वर्तमान आसक्ति ही कर्मफलासङ्ग है। अथवा कर्मफल और आसङ्ग ये दोनों ही छोड़ देने चाहिए। यहाँ नित्य शब्द परमात्मा का वाचक है। 'अभिप्रवृत्तः' अर्थात् जो मेरी आज्ञा से अभीष्ट बुद्धि से कर्म में प्रवृत्त हुआ है। ॥श्री॥

क्रमशः.....

शिखा की वैज्ञानिकता

यज्ञोपवीत रहस्य

□ पूज्यपाद पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत 'विद्यावागीश'

(२६) समस्त जातियों में हिन्दु जाति ही शीत-उष्ण के द्वन्द्व के सहने में प्रसिद्ध है; शीतकाल में प्रातः स्नान-सन्ध्या आदि से नहीं डरती, उसका कारण शिखा का धारण ही है। शिखा छोड़ने पर मर्म स्थानों में दुर्बलता हो जाती है, जिससे वैसा व्यक्ति सर्दी-गर्मी नहीं सह सकता। सर्दी में भूलकर भी स्नान नहीं करना चाहता। गर्मी में अग्निहोत्र में नहीं बैठ सकता। इसके अतिरिक्त शिखा छोड़ने पर यह सामाजिक एवं धार्मिक चिह्न विशेष नष्ट होगा, जिसकी छत्रछाया में संपूर्ण हिन्दु-जाति की एकता स्थापित है। एकता नष्ट होने पर अनेकता होगी; उसकी हानि स्पष्ट है। शिखा के त्याग में शुक्रकी अधोगामिनी गति होने पर कैसी हानि होगी-यह भी परोक्ष नहीं। पुरुषत्व की हानि में अपनी स्त्रियाँ अपने वश में नहीं रहतीं, व्यभिचार में लग जाती है। हिन्दु-स्त्रियाँ पतियों की शिखा के कारण पतिव्रता प्रसिद्ध हैं। जिन जातियों में शिखास्थापन नहीं होता वा हटता जाता है; उस जाति की ही स्त्रियाँ अधिक व्यभिचार में लग जाती हैं; तलाक आदि वही करती या चाहती हैं। यह एक बड़ी भारी हानि है।

शिखा शुक्र की ऊर्ध्वगति में सहायक हुआ करती है। ऊर्ध्वरिताः ही जितेन्द्रिय होता है। जितेन्द्रियों के ही घर में योगियों का जन्म सम्भव हुआ करता है। उनकी स्त्रियाँ उनके वश में होती हैं। हिन्दुजाति में ही योगियों का जन्म अधिकतया हुआ है। शिखा त्याग में निकम्मी, निधर्मक सन्तानें हुआ करती हैं। इस प्रकार शिखा के छोड़ने में बहुत हानियाँ हैं।

समाप्त

‘सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवीतश्च यत् करोति न तत् कृतम्॥’

(कात्यायनस्मृतिः १/४)

‘अमौक्तिकमसौवर्णं ब्राह्मणानां विभूषणम्।
देवतानां पितृणां च भागो येन प्रदीयते॥

(मृच्छकटिक १०/१८)

उपनयन का अर्थ और उसके अधिकारी

संस्कार सोलह प्रसिद्ध हैं, इसे हम अग्रिम निबन्ध में लिखेंगे। उनमें भी उपनयन और विवाह यह दो संस्कार अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। इनमें यहाँ उपनयन-विषय पर कुछ विचार किया जाता है। यद्यपि संस्कार सभी हैं; पर ‘संस्कार’ यह नाम मुख्यतया उपनयन का ही प्रसिद्ध है। उपनयन का सम्बन्ध वेदाधिकारियों से है। जिनको वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है, उनको उपनयन का अधिकार भी नहीं है। इसलिए ‘गर्भाष्टमेन्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम्। गर्भादिकादशे राज्ञो गर्भाष्टमे द्वादशे विशः’ (मनु० २।३६) ‘अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेत गर्भाष्टमे वा, एकादशवर्षं राजन्यम्, द्वादशवर्षं वैश्यम्’ (पारस्क० २।२।१-२-३) इत्यादि वचनों से उपनयन ब्राह्मणादि तीनों का कहा है, न तो यहाँ मनुष्यमात्र शब्द है, न स्त्रियों का ग्रहण है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों का वास्तविक संस्कार इसी उपनयन-संस्कार से होता है। ‘उप-समीपे नयनम्’ यह इसका व्युत्पत्त्यर्थ है। परन्तु इसका केवल व्युत्पत्त्यर्थ स्वीकार करने पर जहाँ-तहाँ अतिव्याप्ति हो सकती है। तब तो किसी पुरुष को वेश्या के पास लेजाना (नयन) भी ‘उपनयन’ माना जा सकेगा; परन्तु

यह इष्ट नहीं। तब यह शब्द 'विवाह' 'श्राद्ध' आदि शब्दों की भाँति पारिभाषिक या रूढ या योगरूढ इष्ट है, केवल यौगिक नहीं। वेद में भी इस प्रकार के शब्द देखने से, वहाँ भी यही अर्थ विवक्षित होने से वेद में भी योगरूढ, रूढ वा पारिभाषिक शब्द सिद्ध हुए, जिन्हें वादी नहीं मानते।

परिभाषा के अनुसार 'आचार्य के समीप वैध नयन' ही 'उपनयन' शब्द वाच्य हुआ करता है। इसीलिए कहा है- 'गृह्योत्कर्मणा येन समीपे नीयते गुरोः। बालो वेदाय, तद् योगाद् बालोपनयनं विदुः।' आचार्य के साथ ही साथ उपनेय वटु को अग्नि तथा गायत्री के समीप भी लाया जाता है। इसीलिए ही 'अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेत्' (२।२।१) इस पारस्कर के सूत्र की व्याख्या करते हुए गदाधरभट्ट ने कहा- 'आचार्यस्य उप-समीपे माणवकस्य नयनम् 'उपनयन' शब्देन उच्यते। उपनयनं च विधिना आचार्यसमीपनयनम् , अग्निसमीपे नयनं वा, सावित्री वाचनं वा'।

आचार्य के पास पहुँचने पर उस वटु को आचार्य की सेवा करनी पड़ती है जिसके द्वारा वह मानसिक-शक्ति को प्राप्त करता है और अपने कार्य में पटुता भी प्राप्त करता है। फिर उसे अग्नि की उपासना करनी पड़ती है, जिसके द्वारा वह शारीरिक शक्ति को पाता है, फिर गायत्री-मन्त्र की उपासना (जप) करनी पड़ती है, जिसके द्वारा वह बुद्धि-पवित्रतारूप आत्मिक बल को प्राप्त करता है।

इसी का नाम यज्ञोपवीत-संस्कार वा आचार्यकरण अथवा व्रत-बन्ध वा उपनयन है।

उपनयन से पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, 'एकज' होते हैं; उपनयन से वे 'द्विज' होते हैं। अर्थात् उनका एक जन्म माता के गर्भ से होता है। तभी श्रीमनु जी ने कहा है- 'आचार्यस्त्वस्य यां जातिं विधिवद् वेदपारगः। उत्पादयति सावित्र्या सा सत्या, साऽजराऽमरा॥' (२।१४८) अर्थात् - आचार्य उपनयन के समय गायत्री मन्त्र के उपदेश से जिस जन्म का सम्पादन करता है, वह दृढ़ होता है।

आचार्य-द्वारा गायत्री प्रदान से पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एकज थे। फिर 'द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति' इस न्याय से उपनयन के समय आचार्य उन्हीं तीन एकज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों को तीन दिन अपने गर्भ में रखता है। तब तीन दिनों के बाद फिर उन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों का दूसरी बार जन्म होता है। पहले वे एकज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थे; अब द्विज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, हो गये। 'द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति' इस न्याय के सुदृढ़ हो गये। इसीलिए वेद में भी कहा है- 'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणां कृणुते गर्भमन्तः। तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति, तं जातं द्रष्टुमभिसंयति देवाः' (अथर्व० सं० ११।५।३)। यहाँ तीन रात आचार्य के गर्भ में रहकर उसके बाद उत्पन्न हुए ब्रह्मचारी के दर्शन के लिए देवता भी आते हैं-यह कहा है। तब आचार्य उपनयनसूत्र, यज्ञसूत्र या ब्रह्मसूत्र या उपवीत को विधिपूर्वक ब्रह्मचारी के गले में पहिनाता है। यज्ञोपवीत पहनाने का मन्त्र यह है- 'यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्मयमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः' (पारस्करगृ० २।२।११)

क्रमशः.....

रासपञ्चाध्यायी विमर्श (६)

□ धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज

“न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि॥”

गी० ३/२२

तीनों लोकों में अब मुझे कुछ भी करणीय नहीं है। मेरे लिए कुछ भी करने की कोई बाध्यता नहीं है कोई विवशता नहीं है और संसार में प्राप्त करने योग्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मुझे नहीं मिल गई हो। मुझे सब मिल चुका है। फिर भी कर्म करता हूँ कर्म में वरतता हूँ। इसका यहाँ क्या तात्पर्य है? भगवान् को गोपियों के साथ खेलने में कुछ मिलना नहीं है। क्योंकि उनको जो चाहिए वो सब उन्हें मिल चुका है। वे तो उद्धव की भाषा में “स्वाराज्य लक्ष्म्याप्त समस्तकामः” अपनी स्वराज्य लक्ष्मी के द्वारा वे समस्त कामनाओं को प्राप्त कर चुके हैं, फिर भी खेल रहे हैं। क्यों खेल रहे हैं? कुछ पाने के लिए? ऐसा नहीं है। भगवान् पाने के लिए नहीं खेलते हैं। एक बालक खिलौने के साथ खेलता है क्योंकि उसका एक अपना आनन्द है। गोपियाँ भगवान् की खिलौना हैं और भगवान् बालक हैं, परन्तु साधारण बालक नहीं हैं, “तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं” भा० १०/३/१० गोस्वामी तुलसीदास जी के भगवान् श्रीराम अनुपम बालक हैं। और वेदव्यास जी के भगवान् श्रीकृष्ण अद्भुत बालक हैं। “अनुपम बालक देखेनि जाई। रूपराशिगुन कही न शिराई॥” मानस १/१९४/८ श्रीराम अनुपम बालक हैं, उनकी किसी से उपमा नहीं है। श्रीकृष्ण अद्भुत बालक हैं। “तमुद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं” दोनों विचित्र हैं। आज गोपियों के साथ खेलेंगे। क्यों? क्योंकि गोपियाँ उनका खिलौना हैं। श्रीमद्भागवत के चीरहरण के प्रसंग में भगवान्

शुकाचार्य एक शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। कैसी हैं गोपियाँ जिनके साथ भगवान् को महारास करना है। “क्रीडनवच्च कारिताः” वे तो भगवान् की खिलौना बन चुकी हैं। यहाँ एक अन्तर बहुत गम्भीरता से समझना होगा। मैं यही कह रहा हूँ कि भगवान् सामान्य बालक नहीं हैं अद्भुत बालक हैं। क्योंकि जब सामान्य बालक खिलौनों के साथ खेलते हैं तो खिलौनों की कोई चिन्ता नहीं करते उसे तोड़-फोड़ देते हैं और हमने तो देखा है कि जो सीधा बालक होता है वह खिलौनों को दो-चार घंटे तक रखता है, पर जो चंचल बालक होता है उसे आज की भाषा में कहें तो जो शरारती बालक होता है वह तो एक ही मिनट में खिलौनों की ऐसी-तैसी कर डालता है। परन्तु भगवान् जिन खिलौनों के साथ खेलते हैं उन्हें तोड़ते नहीं, उनकी कोई हानि नहीं करते प्रत्युत उनको धन्य-धन्य कर देते हैं। जिन गोपियों के साथ भगवान् ने खेला क्रीडनवत् बनाया, खिलौना बनाया उनको तोड़ा नहीं उनको इतना धन्य कर दिया कि उद्धव जैसे महाभागवत कहने लगे कि, अरे-अरे! यदि मैं वृन्दावन की लता बन जाता अथवा वृन्दावन की कोई छोटी-सी घास बन जाता तो कम से कम गोपियों के श्रीचरणकमल की धूलि तो मुझे मिल जाती। इसीलिए—
“आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा
भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम्॥”

भा० १०/४७/६१

४७वें अध्याय में उद्धव गीत का प्रारम्भ होता है। गोपियों को नमस्कार करके उद्धव जी गा रहे हैं

“ता नमस्यन्निदं जगौ।” उद्धव जैसे महाभागवत जिनके लिए भगवान् कहेंगे कि उद्धव मुझसे अणुमात्र भी कम नहीं है, “नोद्धवोऽण्वपि मन्यूनो” भा ३/४/३१ वे गोपियों को नमन कर रहे हैं और कह रहे हैं कि अरे-अरे! जिन गोपियों ने न छोड़ने योग्य दुस्त्यज आर्यपथ को छोड़कर भगवान् के श्रीचरणों को भजन किया उनकी चरण की धूलि से लगी हुई किसी औषधि का शरीर मुझे मिल जाता तो मैं धन्य हो जाता। उद्धव से पूछा गया कि, उद्धव गोपियों के मस्तक में चरण नवाना चाहते हो? तो उद्धव जी ने कहा, नहीं-नहीं मेरी पात्रता ही नहीं कि मैं उनके चरण में मस्तक नवाऊँ। फिर उद्धव जी ने कहा कि गोपियों की चरण की धूलि के एक कण को यदि मैं जीवन भर नमन करता रहूँ तो भी मेरा सौभाग्य मान लेना चाहिए। उनके अर्थात् गोपियों की चरण धूलि के एक कण को ही नमन करने की यदि मुझे पात्रता मिल जाए तो मैं अपने को धन्य मानूँगा “वन्दे नन्दब्रजस्त्रीणां पादरेणुं”। कितनी बार? बोले, “अभीक्षणशः” निरन्तर। उनके एक कणिका का मैं वन्दन कर सकूँ ये मेरा सौभाग्य होगा। तात्पर्य यह है कि साधारण बालक जब खिलौनों से खेलता है तो वह खिलौनों को तोड़ डालता है। उसे कोई खिलौने की चिन्ता नहीं होती। अपने आनन्द में वह इतना तन्मय हो जाता है कि अपने खिलौने की योगक्षेम की वह चिन्ता नहीं करता, परन्तु भगवान् खेलते हैं अपने आनन्द में और साथ-साथ यह ध्यान भी रखते हैं कि ऐसी कोई क्रीड़ा न हो जाए जिससे इस खिलौने का कोई योगक्षेम बाधित हो, इसकी कोई हानि हो यह टूट जाए। अतएव गोपियाँ भी यह समझती हैं कि भगवान् हमारी कभी हानि नहीं करेंगे। भगवान् हमारे योगक्षेम की निरन्तर रक्षा करेंगे। अतएव गोपी चीरहरण का उपसंहार करते हुये शुकाचार्य जी गोपियों की मनोदशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि लग रहा है कि गोपियों के प्रति भगवान् श्रीकृष्ण का अत्याचार है। परन्तु वे समझ

गई हैं नहीं-नहीं, प्रभु का हमारे प्रति अत्याचार हो ही नहीं सकता।

दृढं प्रलब्धास्त्रपया च हापिताः
प्रस्तोभिताः क्रीडनवच्च कारिताः।
वस्त्राणि चैवापहतान्यथाप्यमुं
ता नाभ्यसूयन् प्रियसंगनिर्वृताः॥

भा० १०/२२/२२

शुकाचार्य जी कहते हैं कि भौतिक दृष्टि से लग रहा है कि भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा प्रलब्ध हो गई, ठगी गई “त्रपया च हापिताः” उनकी लज्जा समाप्त हो गई उन्हें “प्रस्तोभिताः” कड़ाके की ठंड में कंपा दिया गया और “क्रीडनवच्चकारिताः” उन्हें खिलौना बना दिया गया। “वस्त्राणि चैवापहतानि” उनके वस्त्र ले लिए गये तथापित भौतिक दृष्टि से इतना होने पर भी “ताः अमुं नाभ्यसूयन्” गोपियों ने भगवान् श्रीकृष्ण की निन्दा नहीं की उनमें दोषदर्शन नहीं किया। वे जानती हैं कि भगवान् हम पर अत्याचार कर ही नहीं सकते। वे साधारण बालक नहीं हैं जो अपने आनन्द की पूर्ति के लिए खिलौनों को तहस-नहस कर डाले। वे तो हमें सजाने आए हैं और वस्तुतः हुआ वही भगवान् ने सजाया। भगवान् जानते हैं कि जब साधारण बालक खेलता है तब खिलौने नष्ट हो जाते हैं और भगवान् को तो इन खिलौनों के साथ अनन्तरात्रिपर्यन्त खेलना होगा। अतः पहले इनकी व्यवस्था कर दी। आज की भाषा में पहले इनको रिपेयर कर दिया बना लिया कि टूटें-फूटें नहीं। चीरहरण की भूमिका यही तो है। प्रश्न है क्यों हो रहा है चीरहरण? क्या भगवान् के मन में कोई वासना है? यहाँ का प्रसंग ठीक से यदि हम देखें तो सारी समस्याओं का स्वयं समाधान हो जायेगा। भगवान् इस समय छः वर्ष के बालक हैं और गोपियाँ भी बहुत छोटी हैं, “नन्द ब्रजकुमारिकाः” शास्त्रों को बिना जाने कुछ भी कह ले। कोई किसी की जीभ तो नहीं पकड़ने जा रहा है।

क्रमशः.....

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ०प्र०)

विकलांग दिवस समारोह २००९

□ कुलसचिव

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट उ०प्र० में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी त्रिदिवसीय विकलांग दिवस समारोह का आयोजन ०१.१२.०९ से ०३.१२.०९ तक किया गया। समारोह का शुभारम्भ ०१.१२.०९ को अपराह्न ३ बजे विश्वविद्यालय के मुक्ताकाश मंच में किया गया। शिक्षकों, अधिकारियों कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता में चित्रकूट के अनेक सभ्रान्त नागरिकों तथा पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि चित्रकूट ग्रामोदय वि०वि० के माननीय कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह जी ने दीप प्रज्वलन करके किया। इस अवसर पर श्री हेमराज सिंह चतुर्वेदी सदस्य व्यवस्थापक बोर्ड, प्रो० योगेन्द्र चन्द्र दुबे (अधिष्ठाता मानविकी संकाय), डा० अवनीश चन्द्र मिश्र (कुलसचिव) एवं अवधेश प्रताप सिंह वि०वि० रीवा के अर्थशास्त्र विभाग के प्रो० एम० पी० पाठक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। मा० अतिथियों द्वारा सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के उपरान्त संगीत विभाग के छात्रों ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए मा० कुलसचिव डा० मिश्र ने विकलांग दिवस समारोह के अन्तर्गत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण करते हुए मुख्य अतिथि प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह जी ने विकलांग छात्र-छात्राओं की प्रतिभा की प्रशंसा की तथा उन्हें हमेशा लक्ष्य की ओर उन्मुख रहने की सलाह दी। कार्यक्रम संचालक डा०

तुलसीदास परोहा ने समारोह के अन्तर्गत होने वाली सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। अध्यक्षीय उद्बोधन मा० हेमराज सिंह ने किया तथा आभार ज्ञापन प्रो० योगेशचन्द्र दुबे ने किया।

तदुपरान्त वि०वि० के छात्र-छात्राओं ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया सुगम संगीत की प्रस्तुति पवन त्रिपाठी एवं युगल नृत्य कु० प्रिया सिंह एवं कु० प्रेमलता मिश्रा ने किया तथा एकल नृत्य बी०एफ०ए० की छात्रा कु० स्नेहा (मूकबधिर) तथा लोकगीत संगीत विभाग की छात्रा कु० ज्योति विश्वकर्मा ने प्रस्तुत किया।

खेलकूद के कार्यक्रम में भाला फेंक, गोला फेंक, क्रिकेट (प्रज्ञाचक्षु छात्रों का), लम्बी कूद आदि में छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये।

मा० मुख्य अतिथि ने ललितकला विभाग के द्वारा आयोजित ललितकला प्रदर्शनी का अवलोकन किया। जिसमें लगभग १०० से अधिक कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। इसके अन्तर्गत चित्रकला, मूर्तिकला एवं मृदाकृतियों तथा टैक्सटाइल डिजाइन आदि का प्रदर्शन किया गया। रंगोली कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। जिसके संयोजक ललित कला विभाग के सहायक आचार्य श्री देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी रहे। ललित कला से सम्बन्धित रंगोली प्रतियोगिता में कु० निधि ने प्रथम दुर्गेशकुमार पाण्डेय ने द्वितीय तथा शिखा जायसवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एप्लाइड एण्ड क्राफ्ट प्रतियोगिता में किरण भारद्वाज ने प्रथम मंतोष ने द्वितीय तथा पवन

कुमार सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चित्रकला प्रतियोगिता में पवन ने प्रथम अभिजीत गुप्ता ने द्वितीय तथा मंतोष यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्टून प्रतियोगिता में ऊषा यादव ने प्रथम नेहा गंगवार ने द्वितीय तथा शिखा जायसवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

समारोह के दूसरे दिन विभिन्न सांस्कृतिक एवं खेलकूद एवं पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इन प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कुलसचिव मा० अवनीशचन्द्र मिश्रा ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करके किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में संगीत एवं साहित्य की प्रतियोगितायें सम्पन्न हुईं। जिसमें छात्र पवन त्रिपाठी ने 'गा रहा हूँ इस महफिल में' गीत गाकर समां बांध दिया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया। ज्योति विश्वकर्मा तथा नेम सिंह तोमर ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दीं तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्रीय वादन (तबला) प्रतियोगिता के क्रम में नेमसिंह तोमर (एम०ए०) ने प्रथम सुनीता राज (बीएड) ने द्वितीय एवं मनीष सिरौठिया (बी०एड०) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके पश्चात् सुगम संगीत की प्रतियोगिता हुई जिसमें कुल ३५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें प्रेमलता मिश्रा ने प्रथम, पवन त्रिपाठी ने द्वितीय एवं मु० शकील अंसारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतिभागियों ने लोक संगीत के द्वारा सम्पूर्ण वि०वि० के वातावरण में भारतीय संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी। इस प्रतियोगिता में ज्योति विश्वकर्मा ने प्रथम, नेम सिंह ने द्वितीय तथा संजय शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता में २३ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें कु० साधना मिश्रा (बी०ए०) ने तृतीय स्थान

तथा हितेश कुमार एवं चंदन मिश्रा ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में निर्णायकों ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान के लिये किसी को उपयुक्त नहीं पाया। सामान्य ज्ञान के संवर्धन के लिए एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल पांच टीमों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान पर रवीन्द्र नाथ टैगोर टीम के सदस्य संजीव कुमार एवं संजीत कुमार रहे। दूसरे स्थान में विवेकानन्द टीम के जियाउद्दीन एवं आनन्द कुमार पाल रहे। इसके पश्चात् श्रोताओं के लिए एक क्विज प्रतियोगिता रखी गयी। जिसमें विनीत पाण्डेय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में १० प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया जिसमें रामदेव ने प्रथम, राजीव ने द्वितीय एवं सोनू त्रिपाठी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वाद-विवाद प्रतियोगिता जिसका शीर्षक "छोटे राज्यों का निर्माण देश के विकास में बाधक है" इसमें प्रतिभागियों ने पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किये। जिसमें प्रथम स्थान पर रामू मिश्रा, द्वितीय स्थान पर अमर कुमार सिंह एवं तृतीय स्थान पर आनन्द कुमार पाल रहे। नृत्य प्रतियोगिता में समूह एवं एकल नृत्य की प्रथक-प्रथम प्रतियोगितायें आयोजित की गयी। जिसमें कु० प्रिया सिंह एवं कु० हेमलता मिश्रा ने प्रथम तथा एकल नृत्य में कु० प्रिया सिंह ने प्रथम तथा प्रेमलता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में क्रीड़ा प्रभारी श्री मनोज कुमार पाण्डेय के संयोजन में विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम नेत्रहीन छात्रों की प्रतियोगिता में दो टीमों थीं। प्रथम टीम ज० रामभद्राचार्य वि०वि० तथा दूसरी प्रज्ञाचक्षु तुलसीपीठ की टीम जो कि विजेता रही। गोला फेंक पुरुष वर्ग में

कुल २० प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें राममिलन प्रथम, गौरव द्वितीय तथा मायाशंकर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में कुल १२ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें रूबी राय ने प्रथम, प्रतिभा चौहान ने द्वितीय तथा अमृता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाल फेंक पुरुष वर्ग में कुल ३१ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें राममिलन प्रथम, माया शंकर द्वितीय तथा चुनकू राम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में कुल १२ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें प्रतिभा चौहान प्रथम, नेहा द्वितीय तथा शिखा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डिस्कस थ्रो पुरुष वर्ग में कुल १८ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें राममिलन प्रथम, मया शंकर द्वितीय तथा प्रवीण कुमार तृतीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग में कुल ८ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें रूबी राय प्रथम, अमृता सिंह द्वितीय तथा प्रतिभा चौहान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बालीबाल महिला वर्ग में निधि ने प्रथम एवं स्नेहा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

त्रिदिवसीय विकलांग दिवस समारोह का मुख्य कार्यक्रम दिनांक ३ दिसम्बर को विश्वविद्यालय के प्रांगण में मा० कुलाधिपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी एवं उ०प्र० सरकार के संस्कृति मंत्री मा० श्री सुभाष पाण्डेय के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। अतिथियों के सम्मान में संगीत विभाग के छात्रों ने स्वागत गीत गाया। मा० कुलसचिव डा० अवनीशचन्द्र मिश्र ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी छात्रों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में सर्वोत्तम प्रस्तुति

के लिये कु० प्रेमलता मिश्र (बी०म्यूज०) को तथा क्रीड़ा प्रतियोगिता में सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए राममिलन (एम०ए०) को सर्वोत्तम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। अतिथियों के सम्मान में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में डा० राजकुमार उपाध्याय मणि (सहा० आचार्य हिन्दी विभाग) द्वारा लिखित पुस्तक “सूरदास और उनकी सूरसारावली” का विमोचन किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि मा० संस्कृति मंत्री श्री सुभाष पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा विकलांग भाई-बहन अद्भुत मेधा के धनी होते हैं उनमें गजब का आत्मविश्वास तथा लक्ष्य को प्राप्त करने की धुन सवार रहती है। यह वि०वि० मानवता का एक मंदिर है जहां समाज की मुख्य धारा से कटे हुए विकलांगों को शिक्षा का अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने का महान कार्य संपादित होता है। मैं इस वि०वि० के लिए अपने व्यक्तिगत कोष से १० लाख रुपये के दान की घोषणा करता हूँ तथा संस्कृति मंत्रालय द्वारा कलाकारों की सहायता के लिये अपेक्षित सहयोग करता रहूँगा। कार्यक्रम का अध्यक्षीय उद्बोधन प्रदान करते हुए वि०वि० के मा० कुलाधिपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी ने कहा विकलांग सहानुभूति का नहीं अपितु समानुभूति का पात्र है। यह वि०वि० विकलांगों के हित में निरन्तर प्रयत्नरत रहेगा। हम इसे पहले केन्द्रीय वि०वि० और फिर अन्तर्राष्ट्रीय वि०वि० बनाने के लिए संकल्पित हैं।

विकलांग दिवस के उपलक्ष्य में बेड़ी पुलिया से डिग्री कालेज तक (लगभग २ किमी०) की छात्रों की ट्राइसाईकिल दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें २३ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें प्रथम,

द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त क्रमशः अरुण कुमार, नत्थूलाल, तथा राकेश त्रिपाठी को ट्राइसाईकिल दौड़ प्रतियोगिता की मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक (चित्रकूट) सु० अपर्णा एच० एस०, डा० अवनीश चन्द्र मिश्र कुलसचिव, क्रीड़ा अधिकारी मनोज कुमार पाण्डेय तथा तुषारकान्त शास्त्री (निर्णायक) द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये।

तदुपरान्त शिक्षक-कर्मचारियों की संयुक्त बालीबाल प्रतियोगिता वि०वि० के क्रीडांगन में श्री विपिन कुमार मिश्र (अपर पुलिस अधीक्षक) एवं प्रो० आर्या प्रसाद त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। प्रथम दल के कप्तान मा० कुलसचिव एवं दूसरे दल के कप्तान डा० शचीन्द्र उपाध्याय थे।

त्रिदिवसीय महोत्सव के समापन में आनन्द मेला का भी आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन डा० कु० गीता देवी मिश्रा (महामहिम कुलाधिपति जी की निजी सचिव) द्वारा हुआ, इसकी संयोजिका डा०

सुनीता श्रीवास्तव ने बताया कि छात्र-छात्राओं ने सभी प्रकार के व्यंजनों का निर्माण स्वयं किया। वि०वि० परिवार ने व्यंजनों का रसास्वादन किया।

ललितकला विभाग के सहा० आचार्य देवेन्द्र त्रिपाठी के निर्देशन में कला संकाय के छात्र-छात्राओं ने भारत माता का प्राकृतिक मानचित्र बनाकर दर्शनार्थियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि ने वि०वि० के छात्रों द्वारा बनायी गयी रंगोलियों तथा कलाकृतियों का अवलोकन किया।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सहभागिता देने वाले छात्र-छात्राओं, विभिन्न कार्यक्रमों के संयोजकों, शिक्षकों, कर्मचारियों, मीडिया, पत्रकारों आदि के प्रति कृतज्ञता के दो स्नेहिल शब्द प्रो० आर्या प्रसाद त्रिपाठी हिन्दी विभागाध्यक्ष ने व्यक्त किये एवं धन्यवाद दिया और संचालन डा० तुलसीदास परोहा (सांस्कृतिक समन्वयक) ने किया।

॥नमो राघवाय॥

सादर आमन्त्रण

श्रीराघव परिवार के सभी सदस्यों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि हमारे सभी के परमाराध्य एवं संरक्षक श्रीचित्रकूट तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज का षष्टिपूर्ति जन्मजयन्ती समारोह आगामी १४ जनवरी २०१० मकरसंक्रान्ति को श्रीतुलसीपीठ आमोदवन के श्रीरामचरितमानस मन्दिर में सोल्लास मनाया जाएगा। यह कार्यक्रम १३ जनवरी २०१० से १४ जनवरी २०१० तक चार सत्रों में सम्पन्न होगा।

आप सभी से साग्रह अनुरोध है कि पूज्यपाद जगद्गुरु जी के दिव्य गुणगणों का गान करने के लिए तथा उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए इस कार्यक्रम में अवश्य पधरें।

आमन्त्रक

श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास
आमोदवन चित्रकूट

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट में पुनर्वास विकास केन्द्र की स्थापना

□ डॉ० शचीन्द्र उपाध्याय

पुनर्वास विकास केन्द्र के बढ़ते कदम

विकलांग जन को चिकित्सा प्रदान करने, प्रशिक्षण देने, तथा विभिन्न प्रकार के रोजगार एवं नौकरियों के लिये तैयार करने की दृष्टि से पुनर्वास विकास केन्द्र की स्थापना जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में की गई है। एक उत्पादक नागरिक के रूप में विकलांगजन समाज के निर्माण में सहयोगी हो सके और साथ ही उन्हें गरिमा पूर्वक जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो सके, यह पुनर्वास केन्द्र का लक्ष्य है।

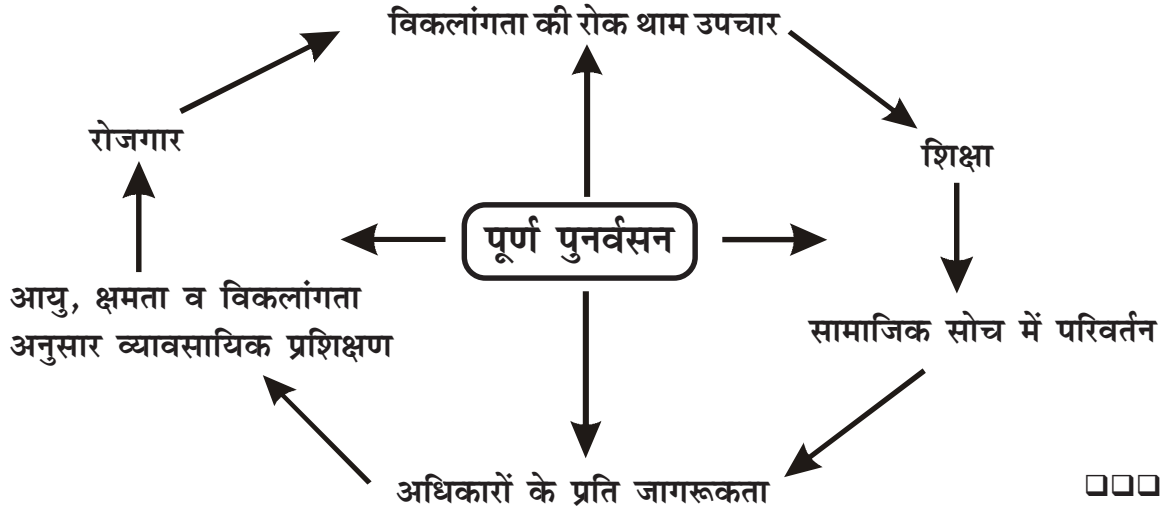
पुनर्वास के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित चक्र के माध्यम से पूर्ण पुनर्वास की स्थिति तक पहुँचने की प्रक्रिया को वर्शाया गया है और इसी माध्यम से संस्था अपने कार्य को आगे बढ़ा रही है।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी की प्रेरणा से पुनर्वास विकास केन्द्र के द्वारा विश्वविद्यालय से ५० कि०मी० की परिधि में विकलांग जन जागरूकता एवं निःशुल्क प्रशिक्षण एवं उपचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उ०प्र० एवं म०प्र० की सीमा पर स्थित यह क्षेत्र अभाव ग्रस्त तो है ही विकलांगता का प्रतिशत भी यहाँ अधिक है। जनजातीय और अनुसूचित जनजाति तथा निर्धन लोगों के उत्थान को ध्यान में रखकर केन्द्र ने विविध प्रयास प्रारम्भ किये हैं। इसी क्रम में राजापुर, ऐचवारा, मानिकपुर, मऊ, रैपुरा, रामनगर, अतर्रा, बाँदा, विसण्डा, मझगवा, पिण्डरा,

सरधुवा, सतना में निःशुल्क जागरूकता प्रशिक्षण एवं उपचार शिविर सुनिश्चित किये गये हैं। इनमें अब तक ९ शिविरों का आयोजन किया जा चुका है जिनमें कुल ११९२ विकलांगों के साथ ही लगभग १७०० निर्धन व गरीब निराश्रित लोगों को चिकित्सा परामर्श दिया गया। इस दौरान रक्त परीक्षण मनोवैज्ञानिक (बुद्धि) परीक्षण श्रवण क्षमता परीक्षण, कर स्वास्वस्थ्य परीक्षण कर निःशुल्क औषधियों का वितरण किया गया जिस दौरान कुल ११९२ विकलांग चिन्हित किये गये जिनमें ४१० अस्थि विकलांगों में ट्राई साइकिल, बैसाखी, कैली पर्श, कृत्रिम पैर के लिये ९३ चयनित हुये ३९ दृष्टि बाधित में छड़ी, ब्रेल शिक्षा, प्रशिक्षण हेतु एवं चयनित हुए २१५ श्रवण बाधित में ६५ श्रवण यन्त्र के लिये चयनित हुए २१ मन्द बुद्धि में ०६ मन्द बुद्धि प्रशिक्षण हेतु चयनित लिये गये शिक्षित विकलांग जनों में ३६ सिलाई प्रशिक्षण ४६ बेकरी प्रशिक्षण ५६ कम्प्यूटर प्रशिक्षण १५ शॉर्ट हैण्ड/टाइपिंग हेतु चयनित किये गये। क्षेत्र में विकलांग अनुसूचित जाति जनजाति गरीब व निराश्रित लोगों को सरकारी तथा गैर सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक किया गया। विश्वविद्यालय में रह रहे छात्र, छात्राओं की चिकित्सा के साथ-साथ विश्वविद्यालय परिसर में विकलांग जनों की चिकित्सा हेतु निःशुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध है जहाँ पर निम्न सुविधायें उपलब्ध है,

रक्त एवं मूत्र परीक्षण, मनोवैज्ञानिक बुद्धि परीक्षण, अत्याधुनिक मशीनों द्वारा श्रवण क्षमता परीक्षण रोजगार में मार्गदर्शन, सरकारी गैर सरकारी योजनाओं की जानकारी पुनर्वास विकास केन्द्र विश्वविद्यालय में

छात्र, छात्राओं के आने जाने के लिये अत्याधुनिक जिसमें अस्थिविकलांग व्हीलचेयर सहित सुविधायुक्त बस नियमित रूप से चलाई जा रही हैं। विश्वविद्यालय आ जा सकता है।



पूज्यपाद जगद्गुरु जी के आगामी कार्यक्रम		
□ प्रस्तुति-पूज्या बुआ जी		
दिनांक	विषय	आयोजक तथा स्थान
13 जनवरी 2010 से 14 जनवरी 2010 तक	जगद्गुरु स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी का षष्टिपूर्ति जन्म जयन्ती महोत्सव	श्रीराघव परिवार स्थान-श्रीरामचरितमानस मन्दिर तुलसीपीठ, आमोदवन चित्रकूट (म०प्र०)
17 जनवरी 2010 से 25 जनवरी 2010 तक	श्रीरामकथा	माघमेला, दण्डी बाबा, श्रीरामलोचन स्वरूप ब्रह्मचारी जी का बाड़ा प्रयाग मो०नं०-09839963232 आयोजक-सर्वेश्वर ब्रह्मचारी जी
31 जनवरी 2010 से 02 फरवरी 2010 तक	मानस सम्मेलन	श्रीरामचरितदास जी महाराज कमलपुर बक्सर (बिहार)
05 फरवरी 2010 से 13 फरवरी 2010 तक	श्रीरामकथा	फूलबाग कानपुर (उ०प्र०)
16 फरवरी 2010 से 24 फरवरी 2010 तक	श्रीरामकथा	श्रीराजेश वर्मा (विधायक गुनौर) अमानगंज जिला पन्ना (म०प्र०) सम्पर्क- 09827047871

कृपया किसी कार्यक्रम में जाने से पूर्व परमपूज्या बुआ जी से सम्पर्क अवश्य करके जायें। कार्यक्रम में परिवर्तन भी हो सकता है।

समाचारपत्रों की सुर्खियों में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट में मनाया गया विकलांग दिवस समारोह २००९

विकलांग बच्चे भी किसी से पीछे नहीं

❖ तीन दिवसीय विकलांग समारोह का शुभारंभ

❖ खेलकूद व चित्रकला प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

जागरण कानपुर २ दिसम्बर २००९ चित्रकूट, कार्यालय संवाददाता : अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस को धूमधाम से मनाने के लिए रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय विकलांग दिवस का आयोजन प्रारंभ हुआ। जिसमें विकलांगों के खेलकूद व चित्रकला की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ।

मंगलवार को त्रिदिवसीय विकलांग दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह ने करते हुए कहा कि इस विवि में आकर यह निश्चित हो गया कि विकलांग बच्चे भी अपने जीवन में सब कुछ कर सकते हैं। ये कहीं से भी कमजोर नहीं नजर आते। विवि के कुलसचिव डा० अवनीश चंद्र मिश्रा ने कहा कि यह देश का पहला विवि है, जो विकलांगों को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रेरित कर रहा है। इसके बाद विवि के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया।

सुगम संगीत की प्रस्तुति पवन त्रिपाठी व प्रेम मिश्रा ने की। एकल नृत्य स्नेहा, लोकगीत ज्योति विश्वकर्मा, युगल नृत्य प्रिया सिंह व प्रेमलता ने प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद खेलकूद की

प्रतियोगिताएं हुई। जिसमें भाला, गोला फेंक, लंबी कूद व प्रज्ञा चक्षु छात्रों की क्रिकेट प्रतियोगिता हुई। इसके बाद ललित कला विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

प्रदर्शनी के संयोजन सहायक आचार्य देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इसमें १०० से अधिक कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। डा० राकेश कुमार, मनोज कुमार, डॉ० महेन्द्र उपाध्याय, अमरीश राय, डा० विपिन पांडेय, अर्चना खरे, पूनम पांडेय व गुलाब धर आदि मौजूद रहे।

जे आर विकलांग विवि में तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह शुरू

आज २ दिसम्बर २००९ : चित्रकूट, १ दिसम्बर। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में मंगलवार से तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह का उद्घाटन महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह ने किया। समारोह की अध्यक्षता विवि बोर्ड के सदस्य हेमराज सिंह चौबे ने किया। इसके अलावा विवि के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो० योगेश चंद्र दुबे, कुलसचिव डा० अवनीश चंद्र मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में वाणिज्य अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो० एम०पी० पाठक उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। मंचासीन रहे अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण कर कुलसचिव डा० अवनीश चंद्र मिश्र ने किया। अपने

उद्बोधन में मुख्य अतिथि प्रो० सिंह ने विवि द्वारा आयोजित विकलांग दिवस समारोह की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस समारोह के माध्यम से विकलांग छात्र-छात्राओं को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का मंच मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह विवि अपने आप में अद्वितीय विवि है। यहां के विकलांग छात्र-छात्राएं जो प्रतिभाएं दिखाते हैं वह दूसरे विवि में नहीं देखने को मिलती। उन्होंने मां सरस्वती से कामना की यहाँ के छात्र-छात्राएं दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करें।

समारोह में विभिन्न खेलकूद की प्रतियोगिताएं आयोजित कराई गईं। ललित कला विभाग द्वारा ललित कला प्रदर्शनी का अवलोकन मुख्य अतिथि प्रो० सिंह ने किया इसके अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला तथा टेक्स कला डिजाइन व रंगोली आकर्षण का केंद्र रहे। तदोपरांत विवि के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम पेश कर अतिथियों का मन मोह लिया। सुगम संगीत की प्रस्तुति पवन त्रिपाठी ने किया। कु० प्रेम मिश्रा ने एकल नृत्य पेश किया। बीएफए की छात्रा कु० स्नेहा व लोकगीत संगीत विभाग की छात्रा कु० ज्योति विश्वकर्मा ने प्रस्तुत किया। युगल नृत्य कु० प्रिया सिंह एवं प्रेमलता मिश्रा ने पेश किया।

कार्यक्रम की सफलता के लिए विवि के शिक्षक डा० राकेश तिवारी, मनोज पांडेय, डॉ० महेन्द्र उपाध्याय, अंबरीश राय, डा० विपिन पांडेय, डा० विनोद कुमार मिश्र, अर्चना खरे, डा० पूनम पांडेय, डा० गुलाब धर सहित तमाम कर्मचारियों व छात्र-छात्राओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। समारोह गुरुवार तक चलेगा। जिसमें विकलांग छात्र-छात्राएं आयोजित होने वाली विविध प्रतियोगी कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आभार प्रो० योगेशचंद्र दुबे ने जताया। जबकि संचालन डा० तुलसीदास परौहा ने किया।

कृतियों ने मनमोहा

अमर उजाला २ दिसम्बर २००९ : जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय ने हर साल की तरह इस बार भी त्रिदिवसीय विकलांग दिवस पर महोत्सव का शुभारंभ हुआ। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विद्यालय के कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह ने विकलांग छात्र-छात्राओं ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

त्रिदिवसीय विकलांग दिवस के उद्घाटन की अध्यक्षता विकलांग विश्वविद्यालय व्यवस्थापक बोर्ड के सदस्य हेमराज चतुर्वेदी ने की। मुख्य अतिथि प्रो० ज्ञानेन्द्र ने उद्घाटन करने के बाद ललित कला के द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसमें लगभग एक सौ अतिथियों का प्रदर्शन किया गया। इसके चित्रकला, मूर्तिकला, मृदा कृतियां और टेक्सटाइल डिजाइन का प्रदर्शन किया। रंगोली विशेष आकर्षण का केंद्र रही। कुलपति प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह ने इस अवसर पर अपने संबोधन में विश्वविद्यालय प्रबंधन के उस प्रयास की जमकर सराहना की। जिसके तहत विकलांग छात्र छात्राओं का भविष्य उज्ज्वल बनाया जा रहा है और उन्हें विकलांग होते हुए सामाजिक रूप से अपने पैरों पर खड़े होने के लिए तैयार किया जा रहा है। महोत्सव संयोजक ललित कला विभाग के सहायक आचार्य देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी रहे। इस मौके पर विवि के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो० योगेश चंद्र दुबे, कुलसचिव डा० अरुणेश चंद्र मिश्रा, विशिष्ट अतिथि रीवा विवि (मप्र) के वाणिज्य और अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो० एम०पी० पाठक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा० तुलसीदास परौहा ने किया।

‘अभिशाप नहीं है विकलांगता’

कुलसचिव ने कहा, विकलांग विवि के बच्चे
होनहार

❖ तीन दिवसीय विकलांग समारोह हुआ शुरु

❖ विवि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने मन मोहा

निज संवाददाता चित्रकूट

हिन्दुस्तान २ दिसम्बर २००९ : जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में मंगलवार को तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह शुरु हुआ। पहले दिन छात्र-छात्राओं के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोहा। गीतों पर सुरताल का अनूठा संगम देख सकलांग भी हैरत में पड़ गए। दोपहर को ग्रामोदय विवि के कुलपति प्रो० ज्ञानेंद्र सिंह ने कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद कहा कि यहाँ विवि के बच्चों में आत्मविश्वास की कमी नहीं है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र महीप सिंह तोमर ने बुंदेलखंड लोक गीत गाया तो संगीता पांडेय ने मनमोहक गजल सुनाई। गीता पंडित ने भजन तो मो० शकील, ज्योति, संजय ने गीतों से समा बाँध दिया। दो घंटे के कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने सुर लय ताल का अनूठा संगम पेश किया। कुलसचिव डॉ० अवनीश चंद्र मिश्रा विवि के व्यवस्थापक बोर्ड के सदस्य हेमराज सिंह चौबे, योगेशचंद्र दुबे आदि ने बच्चों को प्रोत्साहित किया। संचालन तुलसीदास परौहा ने किया। खेलकूद के कार्यक्रम में भाला फेंक, गोला फेंक, क्रिकेट, लंबी कूद आदि में छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए। ग्रामोदय के कुलपति ने ललितकला विभाग द्वारा आयोजित लित कला प्रदर्शनी का अवलोकन किया जिसमें लगभग १०० से अधिक कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया। इसके अंतर्गत चित्रकला, मूर्तिकला, टैक्सटाइल डिजाइन आदि का प्रदर्शन था। रंगोली विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसके

संयोजक ललितकला विभाग के सहायक आचार्य देवेंद्र त्रिपाठी थे। इस मौके पर विवि के डॉ० राकेश त्रिपाठी, मनोज पांडेय, महेंद्र उपाध्याय, अंबरीश राय, डॉ० विपिन पांडेय, डॉ० विनोद मिश्रा, अर्चना खरे, पूनम पांडेय आदि रहे।

विकलांग विवि में हुए कार्यक्रम

प्रतियोगिताओं में विजेता छात्र छात्राओं को

किया गया पुरस्कृत

निज संवाददाता चित्रकूट

हिन्दुस्तान ३ दिसम्बर २००९ : विकलांग विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह के दूसरे दिन भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही। खेलकूद, पेंटिंग प्रतियोगिताएँ हुई, इसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। रजिस्ट्रार डॉ० अवनीश चंद्र मिश्रा ने बताया कि गुरुवार को अंतिम दिन ट्राईसाइकिल दौड़ आदि कार्यक्रम विश्व विकलांग दिवस में होंगे।

दूसरे दिन कार्यक्रम की शुरुआत कुलसचिव अवनीश चंद्र मिश्रा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम में संगीत एवं साहित्य की प्रतियोगिताएँ हुई। छात्र पवन त्रिपाठी ने गीत गाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। ज्योति विश्वकर्मा तथा नेम सिंह तोमर ने प्रस्तुतियाँ देकर द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। शास्त्रीय वादन प्रतियोगिता में नेम सिंह तोमर प्रथम रहीं, सुगम संगीत प्रतियोगिता में कुल ३५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें प्रेमलता मिश्रा प्रथम रही। लोकसंगीत ने विश्वविद्यालय वातावरण में भारतीय संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी। इसमें ज्योति विश्वकर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निबंध प्रतियोगिता में २३ प्रतिभागियों ने भाग लिया। क्विज प्रतियोगिता भी हुई। स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में रामदेव प्रथम, राजीव राजीव एवं तृतीय सोनू त्रिपाठी रहे। वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपने विचार पक्ष एवं विपक्ष प्रस्तुत किए इसमें प्रथम स्थान पर

रामू मिश्रा रहे। गोला फेंक पुरुष वर्ग और भाला फेंक पुरुष वर्ग दोनों में राममिलन प्रथम रहे। महिला वर्ग में प्रतिभा चौहान प्रथम रहीं। यहाँ प्रो० आर्या प्रसाद त्रिपाठी, डॉ० तुलसीदास, निहार रंजन, मनोज, गोपाल मिश्रा, रामशंकर, महेंद्र उपाध्याय, देवेंद्र आदि रहे।

लोक संगीत में ज्योति व सामान्य ज्ञान में विनीत विजेता

❖ विकलांग समारोह का दूसरा दिन

जागरण कानपुर ३ दिसम्बर २००९ चित्रकूट, कार्यालय संवाददाता : विकलांग विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह के दूसरे दिन सांस्कृतिक, खेलकूद व पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें सभी विभाग के छात्रों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की।

बुधवार को विश्वविद्यालय प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में कुलसचिव डा० अरुण चंद्र मिश्रा ने संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में विकलांगों को सकलांगों की भाँति मजबूत किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में भागीदारी कराकर इन छात्रों का मनोबल बढ़ाया जाता है। संगीत व साहित्य प्रतियोगिता में पवन त्रिपाठी प्रथम, ज्योति विश्वकर्मा द्वितीय व नेम सिंह तोमर प्रथम, सुनीता राज द्वितीय व मनीष सिरौठिया तृतीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्रीय वादन में नेम सिंह तोमर प्रथम, सुनीता राज द्वितीय व मनीष सिरौठिया तृतीय स्थान में रहे। सुगम संगीत प्रतियोगिता में ३५ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिसमें प्रेमलता प्रथम, पवन त्रिपाठी द्वितीय व मो० शकील अंसारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके बाद लोक संगीत प्रतियोगिता में छात्रों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसमें ज्योति विश्वकर्मा प्रथम, नेम सिंह द्वितीय व संजय शुक्ला तृतीय रहे। निबंध प्रतियोगिता में

२३ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। क्विज प्रतियोगिता में पांच टीमों ने हिस्सा लिया। जिसमें संजीव व संजीत की टीम प्रथम व जियाउद्दीन व आनंद पाल की टीम द्वितीय स्थान पर रही। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विनीत पांडेय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में खेलकूद व पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। गोला फेंक पुरुष वर्ग में राममिलन प्रथम, गौरव द्वितीय व दयाशंकर तीसरे स्थान पर रहे। महिला वर्ग में रूबी राय प्रथम, प्रतिभा चौहान द्वितीय व अमृता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाला फेंक पुरुष वर्ग में राममिलन प्रथम, दयाशंकर द्वितीय व चुनकू राम तृतीय रहे। जबकि महिला वर्ग में प्रतिभा चौहान प्रथम, नेहा द्वितीय व शिखा तृतीय स्थान पर रहीं। डिस्कस श्रो पुरुष वर्ग में राममिलन प्रथम, मायाशंकर द्वितीय, प्रवीण कुमार तृतीय रहे, जबकि महिला वर्ग में रूबी राय प्रथम, अमृता सिंह द्वितीय व प्रतिभा चौहान तृतीय रहीं। प्रो० आर्या प्रसाद त्रिपाठी, डा० तुलसी दास परौहा, निहार रंजन मिश्रा, देवेंद्र त्रिपाठी, किरन त्रिपाठी, सुनीता श्रीवास्तव, राकेश तिवारी, अंबरीश राय, विपिन पांडेय, विनोद मिश्रा, मनोज पांडेय, गोपाल मिश्रा, गौरव श्रीवास्तव, रमाशंकर, अमित अग्निहोत्री व महेंद्र उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

संगीत में पवन, प्रेमलता अव्वल

विकलांग दिवस समारोह में खेलकूद व पेंटिंग प्रतियोगिताएं

❖ अमर उजाला ब्यूरो

अमर उजाला ३ दिसम्बर २००९ चित्रकूट: जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह के दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियों ने लोगों का मनमोह लिया। पवन त्रिपाठी ने 'गा रहा हूँ इस महफिल में' गीत गाकर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाया। इसके अलावा खेलकूद और पेंटिंग प्रतियोगिताएँ भी हुईं।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० अवनीश चंद्र मिश्र ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप जलाकर किया। प्रथम सत्र में संगीत प्रतियोगिता में पवन त्रिपाठी ने 'गा रहा हूँ महफिल में' गीत गाकर समा बांध दिया। इस गीत के लिए उसे प्रथम घोषित किया। ज्योति विश्वकर्मा और नेम सिंह तोमर को क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान मिला। शास्त्रीय गायन (तबला) प्रतियोगिता में नेम सिंह तोमर को प्रथम, सुनीता राज को द्वितीय और मनीष सिरोठिया को तृतीय स्थान मिला। इसके बाद हुई सुगम संगीत प्रतियोगिता में प्रेम लता मिश्र, पवन त्रिपाठी और शकील अंसारी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान मिला। लोक संगीत कार्यक्रम में ज्योति को प्रथम, नेम सिंह को द्वितीय और संजय शुक्ल को तृतीय स्थान मिला। निबंध प्रतियोगिता में २३ लोगों ने प्रतिभाग किया। इस सत्र में सामान्य ज्ञान, विजय प्रतियोगिताएं भी हुई। दूसरे सत्र में खेलकूद और पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। नेत्रहीन छात्रों की प्रतियोगिता में प्रज्ञा चक्षु तुलसी पीठ की टीम विजेता रही। इस सत्र में गोला फेंक, भाला फेंक, डिस्कस थ्रो आदि प्रतियोगिताएं हुई। समारोह का संचालन प्रोफेसर आर्या प्रसाद ने किया। इस अवसर पर तुलसीदास परीक्षा, निहार रंजन मिश्र, मनोज पांडे, गोपाल मिश्र, राम शंकर, अमित अग्निहोत्री, महेंद्र उपाध्याय, देवेन्द्र त्रिपाठी, किरन त्रिपाठी, सुनीता श्रीवास्तव, डॉ० राकेश तिवारी, अंबरीष राय के अलावा तमाम छात्र और छात्राएं मौजूद रही।

विकलांगों को बजट का १० फीसदी देंगे

संस्कृति मंत्री ने दिया आश्वासन
विकलांग विवि को दस लाख रुपये दिए
निज संवाददाता चित्रकूट
हिन्दुस्तान ४ दिसम्बर २००९ : विकलांग विश्वविद्यालय में गुरुवार को प्रदेश के संस्कृति मंत्री

सुभाष पांडेय ने कहा कि विकलांग होना अभिशाप नहीं है। उनका प्रयास होगा कि होनहार कलाकारों के लिए सरकार बजट में १० फीसदी अनुदान दे ताकि प्रोत्साहित किया जा सके। उन्होंने विवि को १० लाख रुपये देने की घोषणा की।

गुरुवार को विकलांग दिवस समारोह के अंतिम दिन संस्कृति मंत्री ने कहा कि वर्तमान समय समाज के मानसिक विकलांगों को भी ऐसे विवि की जरूरत है। चित्रकूट त्याग की भूमि है जिसने भरत को सर्वस्व त्याग का संदेश दिया। यहाँ से हमें भ्रष्टाचार रहित जीवन जीने का संदेश मिलता है जो राजनीति में भी संभव है। विवि के आजीवन कुलपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने कहा कि विकलांग बच्चे समानभूति के पात्र हैं न कि सहानुभूति के पात्र। विवि के बच्चों की आत्मा बहुत मजबूत है इसलिए उन्हें किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। इस समारोह के अंतिम दिन ट्राईसाइकिल दौड़ बेड़ी पुलिया से डिग्री कालेज तक की प्रतियोगिता में २३ प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें अरुण कुमार प्रथम, नत्थू लाल द्वितीय एवं राकेश कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

त्रिदिवसीय महोत्सव के समापन में आनंद मेला का भी आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन डॉ० गीता देवी मिश्र ने किया। ललितकला विभाग देवेन्द्र त्रिपाठी के द्वार छात्र-छात्राओं ने भारत माता का प्राकृतिक मानचित्र बनाकर दर्शनार्थियों को मंत्रमुग्ध कर दिया मुख्यअतिथि के द्वारा विवि के छात्रों द्वारा बनाई गई विभिन्न रंगोलियों तथा कलाकृतियों के अवलोकन किया प्रो० आर्या प्रसार त्रिपाठी ने आभार जताया।

छात्रों ने कलाकृतियाँ बनाकर दिखाया हुनर

जागरण ४ दिसम्बर २००९ चित्रकूट
संवाददाता: विकलांग विवि के प्राण में लगाये गये आनंद मेला में विकलांग छात्र-छात्राओं ने अपने

हुनर का कमाल दिखाया। हाथी घोड़े के साथ ही फूलदान व तमाम जानवरों व पक्षियों की कलाकृतियां इस बात की गवाही दे रहे थे कि वह भी किसी से पीछे नहीं हैं और वे अपनी बनाई वस्तुओं की नुमाइश लगाकर उसे बेच भी सकते हैं। रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में बीएफए कर रही छात्रा निधि और नेहा ने बताया कि वैसे तो अभी तक उनके बनाये गए उत्पादों की बिक्री नहीं हुई है। यह उत्पाद पहली ही बार लगाए गए हैं लेकिन अगर ये बिकने लगेंगे तो फिर वे इसकी मार्केटिंग करने के लिए सोच सकते हैं। छात्राओं ने बताया कि इस हुनर को उन्हें सिखाने का काम उनके शिक्षक ने किया है और इस काम में उनकी पूरी फैकल्टी के छात्र व छात्राएँ लगे हुए हैं। इनको बनाने के लिए रद्दी, अखबारी कागज के अलावा रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। इस काम में स्नेहा, शिखा, संतोष, कुशल, दुर्गेश, पवन, ज्ञानेंद्र आदि भी लगे हुए हैं।

विकलांगों के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय की है अहम् भूमिका : पाण्डेय

केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाकर लूंगा दम :
कुलाधिपति स्वामी रामभद्राचार्य, एस०पी०
ने हरी झण्डी दिखा रवाना किया ट्राई
साइकिल दौड़

सीतापुर चित्रकूट ४ दिसम्बर २००९ :
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह का समापन विश्वविद्यालय के आजीवन कुलाधिपति स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज एवं प्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्री सुभाष पांडेय के करकमलों द्वारा किया गया। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा विकलांगों की ट्राई साइकिल दौड़ के आयोजन भी हुये। समापन समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि

द्वारा सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन के साथ की गई। प्रिया सिंह, प्रेमलता मिश्रा, स्नेहा ने अतिथियों के सम्मान में नृत्य प्रस्तुत किया। डा० राजकुमार उपाध्याय मणि द्वारा लिखित व प्रकाशित ग्रंथ सूरदास और उनकी सूरसारावली का विमोचन भी संस्कृति मंत्री द्वारा किया गया।

संस्कृत मंत्री सुभाष पांडेय ने कहा कि कोई व्यक्ति विकलांग नहीं होता है बल्कि मन की विकलांगता उस व्यक्ति को विकलांग बनाती है। मानसिक विकलांगता दूर करने के लिए ऐसे विवि की आज जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस विद्यालय का नाम विकलांग वि०वि० नहीं होना चाहिए क्योंकि यह वि०वि० मानवता का मन्दिर है। उन्होंने वि०वि० को सहायतार्थ अपने निजी कोष से १० लाख रुपये देने की घोषणा की और कहा कि उनका मंत्रालय हमेशा मदद के लिए खड़ा रहेगा। मंत्री ने नाना जी के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि त्याग की भूमि है जिसमें भरत को त्याग का संदेश दिया था। इस चित्रकूट से हमें भ्रष्टाचार रहित जीवन जीने का संदेश मिलता है। कुलाधिपति रामभद्राचार्य जी महाराज ने कहा कि विकलांग बच्चे समानभूति के भूखे हैं न कि सहानुभूति के। उन्होंने आगे कहा कि इस वि०वि० के बच्चों की आत्मा बहुत मजबूत है। उन्हें किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। स्वामी जी ने जय भारत जय विकलांग की उद्घोषणा करते हुए कहा कि यह वि०वि० जल्दी केन्द्रीय वि०वि० बनेगा और मैं जीवनपर्यन्त इसका कुलाधिपति बना रहूँगा। मैं संन्यासी हूँ मैं इस वि०वि० के विकास के लिए सदैव समाज से भिक्षा मांगता रहूँगा, अपने लिए नहीं। प्रातः १०.३० बजे बेडीपुलिया से गोस्वामी तुलसीदास डिग्री कालेज तक ट्राई साइकिल दौड़ का आयोजन हुआ जिसमें २३ प्रतिभागियों ने भाग लिया। दौड़ की शुरुआत पुलिस अधीक्षक अपर्णा एचएस ने हरी झण्डी दिखाकर की। इस मौके पर वि०वि० कुलसचिव

डा० अवनीश चन्द्र मिश्र, ग्रामोदय वि०वि० के क्रीडा अध्यक्ष डा० तुषारकान्त शास्त्री भी मौजूद रहे। तदुपरान्त शिक्षक कर्मचारियों की संयुक्त बालीबाल प्रतियोगिता अपर पुलिस अधीक्षक विपिन कुमार मिश्र एवं प्रो० आर्या प्रसाद तिवारी की देखरेख में सम्पन्न हुई। प्रथम दल के कप्तान कुलसचिव डा० अवनीश चन्द्र एवं दूसरे दल के कप्तान डॉ० शचीन्द्र उपाध्याय रहे। समापन के समय आनन्द मेला का भी आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन कुलाधिपति सचिव डा० गीतादेवी मिश्र द्वारा किया गया। इसकी संचालिका डा० सुनीता श्रीवास्तव का योगदान मेले के आयोजन में सराहनीय रहा। ललित कला विभाग देवेन्द्र त्रिपाठी के निर्देशन में छात्र छात्राओं ने भारत माता का प्राकृतिक मानचित्र बनाकर दर्शकों की वाहवाही लूटी। मुख्य अतिथि ने वि०वि० के विभिन्न प्रकल्पों व छात्रों द्वारा बनाई गई रंगोलियों कला कृतियों का अवलोकन भी किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया। जबकि कार्यक्रम का सफल संचालन डा० तुलसीदास परौहा द्वारा किया गया।

व्यक्ति शरीर से नहीं मन से होता विकलांग

- ❖ तीन दिवसीय विकलांग समारोह का समापन
- ❖ विकलांगों की ट्राई साइकिल दौड़ में अरुण बने विजेता
- ❖ संस्कृति मंत्री ने विजेता छात्र छात्राओं को किया पुरस्कृत

चित्रकूट संवाददाता ४ दिसम्बर २००९ : रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय कार्यक्रमों का समापन करने पहुँचे सूबे के संस्कृति मंत्री सुभाष पांडेय ने विकलांग विवि के नाम पर आपत्ति जताते हुए कहा कि मानवता के इस मंदिर का नाम विकलांग विवि नहीं होना चाहिये। उन्होंने विवि के लिए दस लाख रुपये की घोषणा

करते हुए कहा वास्तव में कोई भी व्यक्ति विकलांग नहीं होता बल्कि उसका मन उसे विकलांग बना देता है। उन्होंने कहा आज के दौर में मानसिक विवि की भी आवश्यकता है। चित्रकूट को त्याग की भूमि बताते हुए कहा कि इस भूमि ने पूरे विश्व को भ्रष्टाचार रहित जीने का संदेश दिया है। इस काम के लिए उन्होंने नाना जी देशमुख की भी प्रशंसा की।

विवि के कुलाधिपति जगद्गुरु राभद्राचार्य ने कहा कि विकलांग बच्चे समानभूति के पात्र हैं सहानुभूति के नहीं। कहा कि विकलांग बच्चों की आत्मा बहुत मजबूत है इसलिए उन्हें किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही यह विवि केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनेगा। अपने आप को संन्यासी बताते हुए कहा कि विवि के लिए वे सदैव भिक्षा मांगते रहेंगे। कुलसचिव डा० अमरीश चंद्र मिश्रा ने बताया कि आज प्रदेश सरकार ने इस विवि के श्रीनारायण यादव को दक्ष विकलांग व्यक्ति पुरस्कार प्रदान किया है।

कार्यक्रम को हेमराज सिंह व कु० गीता देवी बुआ जी ने भी संबोधित किया। संस्कृति मंत्री ने तीन दिनों से चल रही प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र व ट्राफी प्रदान की। इसके पूर्व उन्होंने विवि के सभागार में लगी कला प्रदर्शनी के साथ ही पूरे कैंपस को भी देखा। गुरुवार को विवि के छात्रों के दिन की शुरुआत बेड़ी पुलिस से हुई यहां ट्राई साइकिल दौड़ के हरी झंडी पुलिस अधीक्षक अर्पणा एच एच ने दिखायी। इस दौड़ के विजेता अरुण कुमार रहे। दूसरे स्थान पर नत्थू लाल व तीसरे स्थान पर राकेश त्रिपाठी रहे। इसके बाद विवि प्रांगण में वालीबाल का मैत्री मैच विवि के अधिकारी व कर्मचारियों के मध्य हुआ। जिसमें कुलसचिव की टीम को विवि के डा० शचीन्द्र उपाध्याय की टीम ने हरा दिया। विवि के लगाये गये आनंद मेला का उद्घाटन कुलाधिपति की निजी सचिव गीता देवी ने

किया। यहाँ विकलांग छात्र छात्राओं के खाने पीने की वस्तुओं के साथ ही हस्तशिल्प के उत्पादों की प्रदर्शनी लगायी थी।

‘देश के नामचीन कलाकार के साथ मिलेगा मौका

पाठा के विभिन्न इलाकों में गुमनामी में जी रहे लोग कलाकारों के लिए अच्छी खबर कला के साथ वाद्ययंत्र भी चमका ले लोक कलाकार संस्कृति मंत्री

चित्रकूट संवाददाता : अत्यधिक पिछड़े पाठा के विभिन्न इलाकों में गुमनामी का जीवन जी रहे लोक कलाकारों के लिए एक अच्छी खबर है। क्योंकि मानिकपुर टाउन एरिया में करीब दो सप्ताह के भीतर एक अच्छा सांस्कृतिक मंच सजेगा जिसमें वे अपनी कला का जौहर प्रदर्शित कर सकेंगे। इसके अलावा देश के किसी एक नामचीन कलाकार का साथ भी मिलेगा। यह आश्वासन उत्तर प्रदेश के संस्कृति मंत्री सुभाष पांडे ने अमर उजाला में हुई एक अनौपचारिक बातचीत में दिया।

संस्कृति मंत्री सुभाष पांडे ने कहा कि चित्रकूट में एक ऐसा सांस्कृतिक मंच चाहते हैं जिस पर पचास फीसदी स्थानीय लोक कलाकारों को मौका मिले और पचास फीसदी कलाकारों को आमंत्रित किया जाएगा जिनकी कला का देशभर में लोग लोहा मानते हैं। बोले, डी०एम० से इस संबंध में बात करेंगे और हो सकेगा तो इस वर्ष ही चित्रकूट महोत्सव की शुरुआत करा देंगे। अगर इस बार महोत्सव न हो सका तो अगले वर्ष जरूर होगा। बोले, चित्रकूट महोत्सव के लिए वे लगातार प्रयास कर रहे हैं, इसके लिए संस्कृति विभाग से बात चल रही है। मंत्रालय और विभाग के सहयोग से धन आवंटित कर जल्द ही चित्रकूट में महोत्सव की शुरुआत की जाएगी जो कि अनवरत जारी रहेगा हमारी कोशिश रहेगी कि चित्रकूट महोत्सव को कैलेंडर पर लिया जाए ताकि

हर साल इसका आयोजन हो। बोले, चित्रकूट महोत्सव के आयोजन से पहले वे स्थानीय लोक कलाकारों के लिए दो दिन का ट्रेनिंग कैंप भी लगवाएंगे। वे डीएम से बात कर मानिकपुर में दो सप्ताह के भीतर ही पाठा के लोककलाकारों को मौका देने को कार्यक्रम का आयोजन कराएंगे तथा लखनऊ जाते ही संस्कृति विभाग से बात कर धन भी आवंटित कर देंगे।

‘भ्रष्टाचार रहित जीवन जीने का संदेश देती है तपोभूमि’

अमर उजाला चित्रकूट ४ दिसम्बर २००९: चित्रकूट त्याग की भूमि है जिसने भारत को सर्वस्व त्यागने का संदेश दिया। इस तपोभूमि से हमें भी भ्रष्टाचार रहित जीवन जीने का संदेश मिलता है। जो राजनीति में भी संभव है। यह उद्गार संस्कृति मंत्री सुभाष पांडे ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय विकलांग दिवस समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

गुरुवार को समापन समारोह में मुख्य अतिथि संस्कृति मंत्री ने कहा कि कोई भी व्यक्ति विकलांग नहीं होता है बल्कि उसके मन की विकलांगता उसे विकलांग बनाती है। संस्कृति मंत्री ने विश्वविद्यालय को दस लाख रुपए देने की घोषणा करते हुए कहा कि कलाकारों को आगे बढ़ाने के लिए हमारा मंत्रालय अधिक से अधिक सहयोग करता रहेगा। इसके पूर्व मंत्री ने आनंद मेला का अवलोकन कर ललित कला संकाय के विद्यार्थियों निधि, नेहा, किरन, स्नेहा, शिखा, उमेश, कुशल, पवन और शिक्षक देवेन्द्र त्रिपाठी द्वारा बनाई गई अखंड भारत माता के प्राकृतिक मानचित्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में डॉ० राजकुमार उपाध्याय मणि द्वारा लिखित और प्रकाशित ग्रंथ ‘सूरदास तथा उनकी सूरसारावली’ का विमोचन भी किया गया। कुलाधिपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने कहा कि विकलांग बच्चे सहानुभूति नहीं बल्कि समानभूति के पात्र हैं। इस अवसर पर

कुल सचिव डा० अवनीश चंद्र मिश्रा, कुलाधिपति की निजी सचिव गीता मिश्र उर्फ बुआ जी, हेमराज सिंह चतुर्वेदी, प्रभारी डीआईओएस क्रांति पांडे, तहसीलदास एके श्रीवास्तव, उप जिलाधिकारी गुलाब सिंह, समाजसेवी पंकज अग्रवाल सहित कई लोग उपस्थित रहे।

हमसे दूर होता जा रहा धर्म

❖ तुलसीपीठाधीश्वर श्रीरामभद्राचार्य की दैनिक जागरण से चर्चा

जागरण ५ दिसम्बर २००९ कानपुर स्टाफ रिपोर्टर: धर्म अपरिवर्तित है, उसका अनादर हो रहा है। आज धर्म के नाम ही समाज का निर्माण हो रहा है। लोग कर्म भूलते जा रहे हैं। अपना कर्म करना ही सच्चा धर्म है। अशिक्षित समाज, साधु-संतों के कारण आज हम धर्म से दूर होते जा रहे हैं। भगवा व गेरुआ वस्त्र पहनने से ही कोई संत नहीं हो जाता।

दैनिक जागरण से चर्चा करते हुए तुलसीपीठाधीश्वर श्रीरामभद्राचार्य ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर वर्ष २०१० में बन जायेगा। भाजपा द्वारा नहीं, भव्य राम मंदिर न्यायिक प्रक्रिया से ही बनेगा। उन्होंने कहा कि जो लोग अशिक्षित हैं, लिखते-पढ़ते नहीं, वही रामायण में संशोधन की बात करते हैं।

मैंने इस महाकाव्य में संशोधन नहीं, संपादन किया है। संपादन करना किसी का भी मौलिक अधिकार है। श्रीरामभद्राचार्य ने कहा कि राक्षस तो मर गये लेकिन आज मुद्राराक्षस लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। इससे समाज गलत दिशा में जा रहा है। आज धर्म हमसे दूर निकल गया है। इसे नहीं रोका गया तो, वैदिक काल से चली आ रही हमारी संस्कृति का हास हो जायेगा। इसके लिए कदम उठाने के सवाल पर श्रीरामभद्राचार्य ने कहा कि उन्हें ऐसा करने कहा दिया जाता है।

भगवान राम के हैं संत-पूज्य रामभद्राचार्य जी

अमर उजाला कानपुर ५ दिसम्बर २००९ : भाजपा ने साधु-संतों की दूरी को लेकर उठे सवाल

का जवाब देते हुए तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने कहा कि संतों का भाजपा अथवा किसी भी दल से कोई वास्ता नहीं है। साधु-संत तो सिर्फ भगवान राम के हैं। मेरा यह विश्वास है कि बगैर किसी दल की मदद से न्यायिक प्रक्रिया के अन्तर्गत जल्द ही अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनकर तैयार होगा।

स्वामी रामभद्राचार्य विकलांग व्यावसायिक केंद्र में विकलांगों को उपकरण वितरित करने आए हुए थे। रामायण को लेकर उठे विवाद से उन्होंने कहा कि मैंने सिर्फ रामायण का संपादन किया है, संशोधन नहीं। जो लोग इसे विवादित बता रहे हैं, गलत है। रामभद्राचार्य के मुताबिक आज धर्म के नाम पर अशिक्षित साधु-संत आडंबर फैला रहे हैं। इसी कड़ी विश्व विकलांग दिवस के मौके पर कुलाधिपति रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट धाम के स्वामी रामभद्राचार्य ने क्रीड़ा प्रतियोगिता के विजयी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। साथ ही उन्हें स्व रोजगार हेतु सिलाई मशीनें टूल किट और बैसाखी वितरित की। स्वामी जी ने कुछेक छात्राओं से वादा किया कि वे उनका अपने कालेज में दाखिला कराएंगे और उनके विवाह का प्रयास करेंगे। वीआरसी प्रमुख आरआर मिश्रा ने स्वामी के जीवन के बारे में बताया। एटीआई के निदेशक दीपांकर मलिक, एस चटर्जी, एसके सक्सेना, पीके बिंदुआ, एसपी भट्टाचार्य मौजूद रहे।

नाम-दाम वाला नहीं कर सकता सेवा

पूज्यपाद जगद्गुरु जी ने कहा-

❖ जो राम से घृणा करता है, वह राष्ट्र से भी घृणा करता है।

❖ विकलांगों को तीन नहीं, १० फीसदी आरक्षण चाहिए।

❖ विकलांग पुनर्वास केन्द्र में बांटी सिलाई मशीनें, बैसाखी।

जागरण कानपुर ५ दिसम्बर २००९ कानपुर
स्टाफ रिपोर्टर : जो राम से घृणा करता है, वह राष्ट्र से भी घृणा करता है। उनके विश्वविद्यालय में सभी जाति, धर्म के विकलांग विद्यार्थी पढ़ सकते हैं, पर उन्हें वन्दे मातरम् कहना होगा। वे विकलांगों को तीन नहीं, १० फीसदी आरक्षण चाहते हैं जिसे लेकर रहेंगे। जो सेवा करते हैं, वह नाम के पीछे नहीं भागते। नाम, दाम चाहने वाले कभी सेवा नहीं कर सकते हैं। यह कहना है जगद् गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री रामभद्राचार्य जी महाराज का।

वे एटीआई परिसर उद्योगनगर स्थित विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र में विकलांग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि विकलांगों के उत्थान के लिए सरकारें काम कर रही हैं।

श्री रामभद्राचार्य जी महाराज ने कहा कि विकलांग की सेवा जरूरी है। जीवन को कामल बनाये। विकलांगों की सहानुभूति नहीं, बल्कि मानसिक संतोष देना जरूरी है। कार्यक्रम में पहुँचे श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज का विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र के सहायक निदेशक आर०आर० मिश्र ने पुष्पाहार से स्वागत किया।

कार्यक्रम में श्रीरामभद्राचार्य जी ने क्रीड़ा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार व स्वरोजगार हेतु ८ सिलाई मशीनें, १२ बैसाखियां, टूल किट आदि वितरित किये। इस मौके पर एटीआई निदेशक दीपांकर मलिक, आरडीएटी के क्षेत्रीय निदेशक एस० चटर्जी, एलिकमो के महाप्रबंधक एसके सक्सैना, आरएलसी के श्रम प्रवर्तन अधिकारी पीके बिंदुआ, बीआरसी के मनोवैज्ञानिक परवेज आलम मौजूद थे। कार्यक्रम

के दौरान स्वागत गीत, मंगल आरती डा० विजयलक्ष्मी मिश्रा ने की।

मैं दूँगा विकलांगों को रोजगार- उन्होंने कहा कि विकलांग विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले हर छात्र को रोजगार की गारंटी है। यहां पढ़ने आने वाले छात्र केवल पढ़ाई पर ध्यान दें। वे अपने रहने, खाने, पढ़ने पर होने वाले खर्च की चिंता नहीं करें। उन्होंने कहा कि शहरवासी मुझे दक्षिणा में सौ विकलांग दें। उनका पुनर्वास वे स्वयं करेंगे।

केंद्र व राज्य से एक रुपया नहीं लिया- श्रीरामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय भगवान श्रीराम ने बनवाया है। मेरा संकल्प है कि कथा, भागवत में मिलने वाला धन विश्वविद्यालय के नाम होगा। मेरा खर्चा पढ़ाई में मिलने वाले कई पुरस्कारों से चला जाता है। विकलांग विश्वविद्यालय के लिए केंद्र व राज्य सरकार से एक भी रुपया न लिया, न आगे लूंगा।

मोनिका मेरी दत्तक पुत्री- दृष्टिहीन इंटर की छात्रा मोनिका तिवारी मेरी दत्तक पुत्री है। इंटर की परीक्षा देने के बाद वह जुलाई माह में चित्रकूट आ जाये, उसकी पढ़ाई, नौकरी और शादी की सारी जिम्मेदारी अब मेरी है। रामभद्राचार्य जी ने समारोह में दक्षिणा में मिले एक हजार रुपये भी मोनिका को दे दिये। रामभद्राचार्य जी ने 'म्यूजिकल दौड़ प्रतियोगिता' में द्वितीय रही बीए की छात्रा अंजू जायसवाल को भी आगे की पढ़ाई के लिए अपने पास चित्रकूट आने का न्यौता दिया।

हमसे दूर होता जा रहा धर्म

❖ चित्रकूट तुलसीपीठाधीश्वर श्रीरामभद्राचार्य की दैनिक जागरण से चर्चा-

❖ भव्य राम मंदिर का निर्माण वर्ष २०१० होकर रहेगा

कानपुर स्टाफ रिपोर्टर : धर्म अपरिवर्तित है, उसका अनादर हो रहा है। आज धर्म के नाम ही समाज का निर्माण हो रहा। लोग कर्म भूलते जा रहे हैं। अपना कर्म करना ही सच्चा धर्म है। अशिक्षित समाज, साधु-संतों के कारण आज हम धर्म से दूर होते जा रहे हैं। भगवा व गेरुआ वस्त्र पहनने से कोई संत नहीं हो जाता।

दैनिक जागरण से चर्चा करते हुए तुलसी-पीठाधीश्वर श्री रामभद्राचार्य ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर वर्ष २०१० में बन जायेगा। भाजपा द्वारा नहीं, भव्य राम मंदिर न्यायिक प्रक्रिया से ही बनेगा। उन्होंने कहा कि जो लोग अशिक्षित हैं, लिखते-पढ़ते नहीं, वही रामायण में संशोधन की बात करते हैं। मैंने इस महाकाव्य में संशोधन नहीं, संपादन किया है। संपादन करना किसी का भी मौलिक अधिकार है। श्रीरामभद्राचार्य ने कहा कि राक्षस तो मर गये, लेकिन आज मुद्राराक्षस लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। इससे समाज गलत दिशा में जा रहा है। आज धर्म हमसे बिल्कुल दूर निकल गया है। इसे नहीं रोका गया, तो वैदिककाल से चली आ रही हमारी संस्कृति का ह्रास हो जायेगा। इसके लिए कदम उठाने के सवाल पर श्रीरामभद्राचार्य ने कहा कि उन्हें ऐसा करने कहा दिया जाता है।

विकलांगों को अनाथ नहीं, जगन्नाथ मान करें सेवा

❖ विकलांग व्यवसायिक पुनर्वास केन्द्र में विश्वविकलांग दिवस समारोह

राष्ट्रीय सहारा ५ दिसम्बर २००९ कानपुर (एलएनबी) : विकलांगों को अनाथ नहीं, जगन्नाथ मानकर सेवा करें तो हमें चारों धाम जाने की

आवश्यकता नहीं पड़ेगी। विकलांगों को हमारी सहानुभूति की जरूरत नहीं है, बल्कि हमें विकलांगों की अभावजनित पीड़ा को दूर करना होगा। यह बात शुक्रवार को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामभद्राचार्य जी महाराज ने गोविंदनगर सीटीआई स्थित विकलांग व्यवसायिक पुनर्वास केन्द्र में आयोजित विश्व विकलांग दिवस समारोह में कही।

उन्होंने कहा कि जब मैं विकलांगों की सेवा करता हूँ तो मुझे लगता है कि मैं जगन्नाथ की सेवा कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने विकलांगों के लिए रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय खोला है, जहां पर विकलांगों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय को प्रदेश व केंद्र सरकार से एक भी पैसे का अनुदान नहीं मिलता है, और न ही वे लेना चाहते हैं, क्योंकि सरकार कागजों पर बहुत कुछ करती है और होता कुछ और है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यदि मैं सरकारी प्रपंचों में रहूँगा तो विकलांगों की सेवा नहीं हो पायेगी। उन्होंने कहा कि मेरे विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले विकलांग को रोजगार उपलब्ध कराने की गारंटी मेरी होती है। उन्होंने नगर के विकलांगों से विश्वविद्यालय में आकर शिक्षा ग्रहण करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान स्वामी रामभद्राचार्य ने विकलांगों को सिलाई मशीन, टूल किट व बैसाखी वितरित की। उन्होंने 'रघुपति राघव राजा राम' भजन गाने वाली छात्रा मोनिका तिवारी को एक हजार रुपये का नगद पुरस्कार भी दिया। इस मौके पर वीआरसी कानपुर के प्रमुख आर०आर० मिश्रा, एटीआई के निदेशक दीपांकर मलिक, मनोज त्रिपाठी, एस चटर्जी, एसके सक्सैना, पीके बिंदुआ, एसपी भट्टाचार्य, परवेज आलम आदि मौजूद थे। □□□

॥श्री॥

पिबत भागवतं रसमालयम्

पूज्यपाद जगद्गुरु जी के श्रीमुख से पुनः ऐतिहासिक भागवत कथा
श्रीद्वारका धाम (गुजरात) में

अत्यन्त प्रसन्नता का समाचार है कि श्रीबदरीनाथ श्रीजगन्नाथपुरी तथा श्रीरामेश्वरम् में पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज के श्रीमुख से श्रीमद्भागवत कथा कराने के उपरान्त श्रीराघव परिवार पुनः चौथे धाम श्रीद्वारका (गुजरात) में दिनांक १ मई २०१० से ८ मई २०१० तक श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन करा रहा है।

आप सभी भागवत कथा प्रेमियों से विनम्र प्रार्थना है कि इस कथा में सम्मिलित होने के लिए ३१ जनवरी २०१० तक हमारे निम्नलिखित पते पर अपनी स्वीकृति भेजने की कृपा करें। साथ ही व्यवस्था सम्बन्धी सुझाव तथा सहयोग देकर इस कार्यक्रम को और अधिक सफल बनाने में हमारी सहायता करें। आशा है आप पूर्व की भाँति अपनी कृपादृष्टि अवश्य बनाए रखेंगे।

निवेदक

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता

मुख्य यजमान

१८८ कटरा नबाव चाँदनी चौक

दिल्ली-११०००६

व्रतोत्सवतिथिनिर्णयपत्रक
माघ कृष्णपक्ष/सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
सप्तमी	बुधवार	उ०फा०	6 जनवरी	श्रीआद्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती तथा स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
अष्टमी	गुरुवार	हस्त	7 जनवरी	श्रीदुर्गाष्टमी
नवमी	शुक्रवार	चित्रा	8 जनवरी	—
दशमी	शनिवार	स्वाति	9 जनवरी	—
एकादशी	रविवार	विशाखा	10 जनवरी	—
द्वादशी	सोमवार	अनुराधा	11 जनवरी	षट्तिला एकादशी व्रत (सबका)
त्रयोदशी	मंगलवार	ज्येष्ठा	12 जनवरी	भौम प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	बुधवार	मूल	13 जनवरी	त्रयोदशी तिथि की वृद्धि लोहड़ी उत्सव
चतुर्दशी	गुरुवार	पू०षा०	14 जनवरी	मकरे सूर्य-मकर संक्रान्ति जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी की जन्म जयन्ती
अमावस्या	शुक्रवार	उ०षा०	15 जनवरी	मौनी अमावस्या सूर्यग्रहण दिन 11-53 से 15-12 तक

माघ शुक्लपक्ष/सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
प्रतिपदा	शनिवार	श्रवण	16 जनवरी	चन्द्रदर्शनम्
द्वितीया	रविवार	श्रवण	17 जनवरी	पंचक प्रारम्भ 11/38 रात से
तृतीया	सोमवार	धनिष्ठा	18 जनवरी	गौरी तृतीया व्रत
चतुर्थी	मंगलवार	शतभिषा	19 जनवरी	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	बुधवार	पू०भा०	20 जनवरी	श्रीवसन्त पंचमी श्रीसरस्वतीपूजा
षष्ठी	गुरुवार	उ०भा०	21 जनवरी	—
सप्तमी	शुक्रवार	रेवती	22 जनवरी	पंचक समाप्त रात 10/51 पर अचला सप्तमी
अष्टमी	शनिवार	अश्विनी	23 जनवरी	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत
नवमी	रविवार	भरणी	24 जनवरी	—
दशमी	सोमवार	कृतिका	25 जनवरी	—
एकादशी	मंगलवार	रोहिणी	26 जनवरी	जया एकादशी व्रत (सबका), गणतन्त्र दिवस
द्वादशी	बुधवार	मृगशिरा	27 जनवरी	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	गुरुवार	आर्द्रा	28 जनवरी	—
चतुर्दशी	शुक्रवार	पुनर्वसु	29 जनवरी	सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	शनिवार	पुष्य	30 जनवरी	सन्त रैदास जयन्ती माघ स्नान पूर्ण

फाल्गुन कृष्णपक्ष/सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	व्रत पर्व आदि विवरण
प्रतिपदा	रविवार	श्लेषा/मघा	31 जनवरी	—
द्वितीया	रविवार	श्लेषा/मघा	31 जनवरी	द्वितीया तिथि का क्षय
तृतीया	सोमवार	पू०फा०	1 फरवरी	—
चतुर्थी	मंगलवार	उ०फा०	2 फरवरी	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
पंचमी	बुधवार	हस्त	3 फरवरी	—
षष्ठी	गुरुवार	चित्रा	4 फरवरी	—